महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

नवम्बर/दिसम्बर २०२०

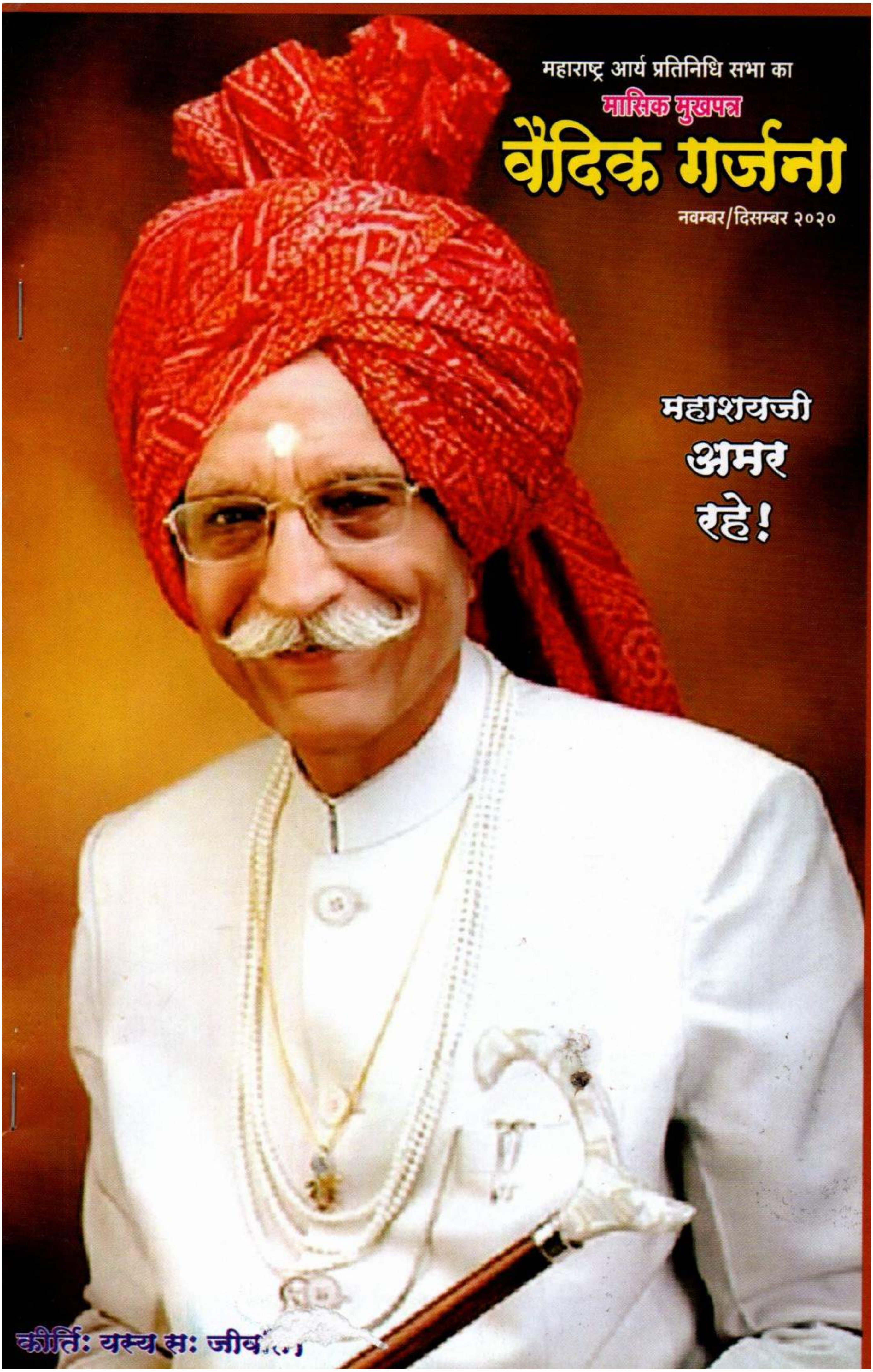

महाशयजी अमर रहे!

कीर्तिः यस्य सः जीव

महाशयजी के पार्थिव शरीर पर अन्तिम संस्कार करते हुए सुपुत्र श्री राजीव गुलाटी जी एवं अन्य

शान्ति यज्ञ करते समय श्री राजीवजी एवं श्रीमती ज्योति गुलाटी जी।

एमडीएच परिवार व सामाजिक कार्यों का उत्तरदायित्व ग्रहण कर रहें गुलाटी दम्पती को आशीर्वाद प्रदान करते हुए आर्य संन्यासी एवं वैदिक विद्वान।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा का मासिक पत्र

वैदिक गर्जना (स्मृति अंक)

प्रधान सम्पादक
राजेन्द्र दिवे
(९८२२३६५२७२)

मार्गदर्शक सम्पादक
डॉ.ब्रह्ममुनि

सम्पादक
डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक
प्रा.देवदत्त तुंगार(९३७२५४१७७७), प्रा.ओमप्रकाश होलीकर(९८८१२१५६१६),
ज्ञानकुमार आर्य(९६२३८४२२४०), राजवीर शास्त्री(९८२२९९००११)

विभाति कायः करुणापराणां,
परोपकारैः न तु चन्दनेन।

विश्वविख्यात समाजसेवी व्यक्तित्त्व

पद्मभूषण महाशय धर्मपालजी

को शत्-शत् नमन...!

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,१२१ कलि संवत् ५१२१ विक्रम संवत् २०७७
दयानन्दाब्द १९६ कार्तिक/मार्गशीर्ष नवम्बर/दिसम्बर २०२०

-० महाशय धर्मपालजी स्मृति अंक ०-

अनुक्रम...

* हिन्दी विभाग *

१) श्रुतिसुगन्ध ०४
२) सम्पादकीयम् ०५
३) स्मृतिशेष महाशय धर्मपालजी-प्रेरक जीवन.................... ०७
४) महाशयजी को विभिन्न नेताओं के श्रद्धासुमन १०
५) महाराष्ट्र सभा के पदाधिकारियों की श्रद्धांजलियां १४
६) एमडीएच महाशयजी की विभिन्न सेवाएं २१
७) कर्मयोगी महात्मा को अन्तिम विदाई २४

* मराठी विभाग *

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी २७
२) टांगेवाला ते मसाल्यांचे बादशाह(जीवनप्रवास).................... २८
३) महाशयजींना दै.लोकसत्ताची श्रद्धांजली.................... ३१
४) म.दयानंदांचे सामाजिक विचार ३३
५) वार्ताविशेष ३६
६) शोक वार्ता ३७

* प्रकाशक *
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ-४३१५१५

* मुद्रक *
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परली-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क
वार्षिक रू.१००/-
आजीवन रू.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवादकी परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

(सम्पादकीय) महदाशघन धर्मपालक-'महात्मा'

परोपकारार्थं यो जीवति,स जीवति।

अपने लिए तो सभी जीते है, लेकिन समाज, देश व राष्ट्र के लिए अपना तन, मन, धन लगानेवाले सत्पुरुषों का ही जीवन सफल व सार्थक माना जाता है। इसीलिए शायद कवि ने कहा है...

जीना उसका जीना है,

जो औरों के काम आये..!

यह संसार ऐसे ही महान् दिव्य विभूतियों के सदाशयपूर्ण पावन जीवनयज्ञों से सदैव गतिमान रहता है, जो मनसा-वाचा-कर्मणा समाज व राष्ट्र के कल्याण हेतु जीते रहते है। देश को जहां ब्रह्मवेत्ता विद्वानों की असीम विद्वत्ता, सच्चरित्रता व जीवनसाधना चाहिए, वहीं क्षात्रतेज से ओतप्रोत वीरों की शूरता चाहिए। इसी के साथ अथक पुरुषार्थ से धनप्राप्त करनेवाले उदारमना दानी उद्योगपतियों की आर्थिक सहायता व सहयोग भी! तभी तो उस देश में मानवहितकारी व राष्ट्र कल्याणकारी गतिविधियाँ बढने में सहायता मिलती हैं।

स्वतन्त्रता के पश्चात् आर्य जगत् को कुछ ऐसी ही दानी हस्तियां मिली, जिनमें महाशय धर्मपालजी का नाम बडे गौरव के साथ लिया जाता है। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी बडे धैर्य व साहस के साथ अपार कष्टों को झेलते हुए उद्योग व व्यापार जगत् में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करना, यह कोई साधारण बात नहीं है। लेकिन धैर्य के धनी महाशयजी अपने क्षेत्र में बडी शान के साथ आगे बढते रहे।

शून्य से विश्व का सृजन करने का सामर्थ्य रखनेवाले श्री महाशयजी के प्रेरक कार्य, आर्य सामाजिक सेवा व परोपकार समग्र विश्व के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बना। केवल उद्योगजगत् को ही नहीं, बल्कि सामान्य लोगों तक उनका जीवन कार्य दीपस्तंभ की भाँति सदैव नयी दिशा देनेवाला सिद्ध होता है।

अपना सारा धनवैभव परोपकार, सेवा के साथ वैदिक विचारधारा के प्रचार व प्रसार में लगानेवाले स्वनामधन्य महाशय धर्मपालजी सभी उद्योगपतियों में अग्रणि रहें। धन-वैभव से भरा भण्डार तो सभी के पास होता है, लेकिन अपने धन को मानव के दु:ख दर्द को मिटाने में लगाता है, वह सही अर्थों में धनवान् कहता है।

महाशय धर्मपालजी तो इससे भी आगे बढ गये। जिस अविद्या-अन्ध:कार के कुचक्र से संसार का प्रत्येक मानव दु:खी व परेशान है, उन्हें मिटानेवाले सर्वोत्तम वेदज्ञानरूपी औषधि के प्रचार व प्रसार में अपना धनमाल लुटा दिया। अन्य उद्योगपति या व्यापारी भी दान देते हैं,

लेकिन उनका दान इसलिए सफल नहीं माना जाता, क्योंकि उनके दातृत्व का प्रवाह पाखण्ड गुरुडम एवं अन्धविश्वासों को बढावा देने की ओर झुक जाता है। कोई उद्योगी व्यापारी अपने धन को तिरूपति बालाजी के लिए, तो कोई माता वैष्णोदेवी, तो कोई शिर्डीवाले साईबाबा या अम्मा-भगवान के लिए समर्पित करता है। तो कोई अपना धन अपने मत मजहब या जातिगत संस्थाओं को अर्पण करता है। कोई अन्य कार्यों के लिए अपना धनमाल लगाता है। लेकिन महाशयजी ने महर्षि दयानन्द द्वारा पुनर्स्थापित ईश्वरीय वेदविद्या के प्रसार में तथा आर्य समाज से सम्बन्धित संस्थाओं को संचालित करने में सर्वतोमना अपना सर्वस्व लगाया। गीता में उध्दृत-'**देशे काले पात्रे च तद्दानं सात्विकं स्मृतम्।**' के अनुसार आपकी दानशीलता अतिशय सात्विक व उपयुक्त सिद्ध होती रही है!

महाशयजी का समग्र जीवन परिश्रम, पुरुषार्थ, आस्तिकता, मानवता, दानशीलता आदि गुणों से सुरभित होता रहा। उनके व्यक्तित्त्व का अवलोकन करेंगें, तो हमें पता चलता है कि, सच में वे ईश्वरीय महान गुणों के आशय थे। साथ ही धर्म का पालन करनेवाले वे धर्मात्मा रहे हैं। सदैव प्रसन्नता की प्रतिमूर्ति महाशयजी जहाँ कहीं भी गये, वहीं पर उन्होंने '**हस्तस्य भूषणं दानम्।**' के अनुसार अपने हाथों से करोडों रूपयों का दान किया। आर्य जगत् में सम्प्रति वेदप्रचार एवं आर्य सामाजिक कार्यों की गतिविधियाँ चल रही है, इनके लिए महाशयजी जैसे भामाशाह का वरदान रहा। जब भी उन्हें मानवकल्याणकारी एवं राष्ट्रहितकारी कार्य दिखाई पडते, तब उनकी आत्मा कुछ देने के लिए लालायित होती रही। बाल्यावस्था में आर्य समाज के संस्कारों का ही परिणाम रहा कि, वे आजीवन आर्य समाज के पोषण, पालक व संवर्धक रहें। तांगा चलाने के कष्टसाध्य जीवन से लेकर पद्मभूषण तक के गौरव को प्राप्त करना कोई आसान कार्य नहीं था। यह तो महाशय जैसी दिव्यात्मा से ही सम्भव हुआ। जब भी कोई दीन-दुखी, अपाहिज, साधु-विद्वान उनके पास आया, वह खाली हाथ वापस नहीं लौटा। अपार ईश्वरभक्ति, दृढ राष्ट्रनिष्ठा, परोपकार, समाजसेवा आदि कार्यों के माध्यम से महाशयजी 'अमर' हो गये। आर्य समाज का एक महान आधारस्थल युगों-युगों तक संघर्ष व परोपकार का संदेश देता रहेगा। महाशयजी को श्रद्धावनत् विनम्र श्रद्धांजलि..!

– नयनकुमार आचार्य

मानवता के शिखर पुरुष...

स्मृतिशेष महाशय धर्मपालजी– प्रेरक जीवन

– विनय आर्य (महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्र.सभा)

विश्व प्रसिद्ध एम.डी.एच. कंपनी के चेयरमैन, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संरक्षक, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के प्रधान, अनेक अन्य संस्थाओं के अध्यक्ष, संरक्षक और प्रणेता आदि पदों को गरीमा प्रदान करनेवाले, सम्पूर्ण धरा पर प्रेमसुधा बरसाने वाले, पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की ९८ वर्षीय जीवन यात्रा चिरकाल तक मानव समाज को प्रेरित करती रहेगी। २७ मार्च १९२३ को सियालकोट, वर्तमान पाकिस्तान में एक संपन्न परिवार में आपका जन्म हुआ। आपने अपनी आरंभिक शिक्षा आर्य स्कूल में प्राप्त की, कक्षा ५ तक पढने के बाद अपने पारिवारिक व्यापार मसालों के कार्यों से आप जुड गए। सन् १९४७ में भारत विभाजन के कारण आप अपनी जन्मभूमि को छोडकर परिवार सहित खाली हाथ भारत आ गए। इसके उपरांत अथक परिश्रम और पुरुषार्थ करके आपने एक संघर्षशील जीवनयात्रा का शुभारंभ किया और हर क्षेत्र में लगातार सफलता के अनेकानेक कीर्तिमान स्थापित किये।

इस बीच अपने तांगा भी चलाया और छोटे से छोटे, बडे से बडे हर तरह के मेहनतकश कार्य भी किये लेकिन कभी हार नहीं मानी। आपका तो हमेशा यही मानना था कि चाहे जीवन में हार जाओ लेकिन कभी हार नहीं मानो! इसी दृढ इच्छाशक्ति और निरंतर के प्रयास तथा कडी मेहनत के बल पर आपने एम.डी.एच. कंपनी को शिखर तक पहुंचाने का संकल्प साकार कर दिखाया। आज आप हमारे बीच में नहीं हैं, किन्तु आपकी सुदीर्घ जीवन यात्रा से जुडे हुए प्रेरक प्रसंग राष्ट्र सेवा, मानव सेवा, चिकित्सा, शिक्षा और सुरक्षा के लिए किये गये योगदान को मानव समाज सदा–सर्वदा स्मरण रखेगा।

बहुआयामी व्यक्तित्त्व के स्वामी महाशय धर्मपाल जी का जीवन सद्गुणों की बहुमूल्य खान था। आपके कर्मों की कुशलता, सद्भाव, सौम्यता, दानशीलता, परोपकार की भावना आदि समस्त प्रेरणाएं

मानव समाज की धरोहर हैं। आपकी अनेकानेक विशेषताओं में स्मरण शक्ति बडी अद्‌भुत थी। संपूर्ण विश्व में आपके लाखों चाहनेवाले थे और हजारों लोग आपके कार्य-व्यापार से जुडे थे। परिवार, समाज, संगठनों के सैकडों लोग प्रतिदिन आपसे मिलने आते, अधिकांशतया आप अपने सभी स्वजनों को उनके नाम से पुकारते और उससे भी ज्यादा लोगों को आप उनके चेहरों से पहचान लेते थे। कौन किस राज्य, नगर, स्थान का रहनेवाला है, आप उसे भरी भीड में भी पहचान लेते थे। आपकी स्मरण शक्ति के विषय में इससे भी ज्यादा आश्चर्य तब होता था, जब आप इतने व्यस्त होते हुए भी अपने जीवन के बहुमूल्य संस्मरण, ज्ञान-ध्यान की बातें, सारगर्भित किस्से-कहानियां, संस्कृति-सभ्यता के महानायकों के नाम, उनकी ऐतिहासिक प्रेरणा प्रेरक प्रसंग आदि ऐसे सुनाते थे जेस कि यह कल की ही बात हो।

इस तरह के उतार-चढाव भरे जीवन में सदैव हंसते-मुस्कराते हुए दिखाई देनेवाले महाशय जी मानव कल्याण के लिए हमेशा धीर-गंभीर तथा चिंतन करते रहते थे। साधारणतया आपको गंभीर मुद्रा में किसी ने देखा हो, ऐसा हमें विश्वास नहीं होता। किन्तु आधुनिक युग में शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, पाविरिक, सामाजिक, आध्यात्मिक स्तर पर समाज में आ रही गिरावट के लिए आप सदैव गंभीरता से विचार करते थे। अपने लिए और अपनों के लिए तो सभी सोचते हैं, किन्तु जो मानवमात्र के लिए चिन्तित हो ओर केवल चिंतित ही नहीं, समाज के उत्थान के विषय में विचार करे, वह मनुष्य नहीं 'देवता' होता है।

महाशय जी एक महान देवता थे। आपका ह्वदय तब द्रवित हो उठता, जब आप आजकल के समय में हो रहे मानवीय मूल्यों के पतन को देखते-सुनते थे। समाज में आपा-धपी मची हुई है, स्वार्थ मनुष्य के सिर पर बैठा हुआ है, वायु-प्रदूषण, ध्वनी-प्रदूषण और वैचारिक प्रदूषण राक्षस की तरह सबकुछ ग्रसने के लिए तैयार है। संयुक्त परिवार प्रणालि टूटकर बिखरती जा रही है, रिश्ते-नातों की गरिमा समाप्त होती जा रही है, धर्म-अध्यात्म में ढोंग-पाखंड में भोली जनता फंसती जा रही है। कर्म पर लोग विश्वास कम कर रहे हैं, परिश्रम और पुरुषार्थ के साथ परमात्मा की सच्ची भक्ति, सेवाभाव से लोग अंजान होते जा रहे हैं। इस तरह की तमाम समस्याओं के प्रति आप गंभीर चिंतन करते थे। और इन सभी समस्याओं के समाधान के लिए आप आर्य समाज

द्वारा संचालित सेवा प्रकल्पों को और ज्यादा तीव्र गति से चलाने की प्रेरणा प्रदान करते थे, आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में अपार धनराशि देकर आप सहयाग करते थे।

आपके महान व्यक्तित्त्व और परोपकारी कार्यों को ध्यान में रखते हुए सन् २०१९ के गणतंत्र दिवस पर भारत सरकार द्वारा आपको **'पद्मभूषण'** सम्मान प्रदान किया गया। आर्य समाज द्वारा **'आर्यरत्न'** सम्मान, कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी द्वारा **'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड'**, भारत सरकार का 'I T I D Quality Excellence Award' तथा यूरोप में मसालों की शुद्धता के लिए आपको विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया। कर्नाटक के राज्यपाल ने आपकों 'Reader Digest Most Trusted Platinum Award 2008' प्रदान किया। सम्मानों के इस अनुक्रम में आपको अनेक सम्मान प्राप्त हुए, लेकिन आपने अपने में कभी भी बडप्पन या अहंकार को जगने नहीं दिया। आपने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षाओं और संदेशों के अनुसार मानव सेवा के अनेकानेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं, शिक्षा के क्षेत्र में स्कूल और चिकित्सा के क्षेत्र में अस्पतालों के साथ-साथ वृद्धाश्रम, अनाथालय, गौशाला, आदिवासी क्षेत्रों के बच्चों के लिए बडे-बडे स्कूल, छात्रावास, बालवाडी, गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, यज्ञशालाएं, प्रतिभावान बच्चों के लिए प्रतिभावान संस्थान, विधवा तथा निर्धन बेटियों के विवाह में सहयोग करना, इत्यादी मानव सेवा के कार्य किए हैं। ९८ वर्ष की अवस्था में आपको अमर होने पर आर्य समाज, देश और दुनिया की विनम्र श्रद्धांजलि, आपके समस्त सेवा कार्यों को देश व समाज सदैव चिरकाल तक स्मरण रखेगा।

महाशय धर्मपाल एक सच्चे कर्मयोगी के रूप में कर्म व संघर्ष को ही सबसे बडी पूजा मानकर सदैव कर्म-पथ पर अग्रसर रहे। लेकिन उनका संघर्ष सिर्फ व्यक्तिगत उन्नति तक ही सीमित नहीं था, बल्कि संघर्ष से हासिल की गयी समृद्धि को वे समाज की खुशहाली के लिए मुक्तहस्त से न्योछावर करते रहे।

महाशय धर्मपाल स्वयं अपनी एमडीएच कंपनी के ब्रांड अम्बेसेडर रहे हैं और इस दायित्व को भी उन्होंने बखूबी निभाया है। टी.वी. के विज्ञापनों में एमडीएच मसालों की खूबियों का बखान करते हुए इनके इस्तेमाल के लिए प्रेरित करता हुआ उनका हंसता-मुस्कराता चेहरा आज किसी के लिए भी अपरिचित नहीं है।

पद्मभूषण महाशयजी की पावन स्मृति में...

देश के नेताओं व आर्य नेताओं के श्रद्धासुमन!

❖श्री रामनाथ कोविन्द
(महामहिम राष्ट्रपति) -

पद्मभूषण से सम्मानित, 'महाशयां दी हट्टी' (एमडीएच) के अध्यक्ष श्री धर्मपाल गुलाटी जी के निधन से दुःख हुआ है। वे भारतीय उद्योग जगत के एक प्रसिद्ध व्यक्तित्त्व थे। समाज सेवा के लिए किये गए उनके कार्य भी सराहनीय हैं। उनके परिवार व प्रशंसकों के प्रति मेरी शोक-संवेदनाएं।

❖श्री अमित शाह
(गृहमंत्री, भारत सरकार) -

सौम्य व्यक्तित्त्व के धनी महाशय धर्मपालजी संघर्ष और परिश्रम के एक अद्भुत प्रतीक थे। अपनी मेहनत से सफलता के शिखर को प्राप्त करनेवले धर्मपाल जी का जीवन हर व्यक्ति को प्रेरित करता है। प्रभु उनकी दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें व उनके परिजनों को यह दुःख सहने की शक्ति दें।

❖श्री राजनाथ सिंह
(रक्षामंत्री, भारत सरकार)-

भारत के प्रतिष्ठित कारोबारियें में से एक महाशय धर्मपालजी के निधन से मुझे दु:ख की अनुभूति हुई है। छोटे व्यवसाय से शुरु करने बावजूद उन्होंने अपनी एक पहचान बनाई। वे सामाजिक कार्यों में काफी सक्रिय थे और अंतिम समय तक सक्रिय रहे। मैं उनके परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता हूँ।

❖आचार्य देवव्रत
(महामहिम राज्यपाल, गुजरात)-

श्रम, संघर्ष, सदाशयता, दान और करुणा की प्रतिमूर्ति, अद्भुत जीवन और प्रसन्नता के अपूर्व निर्झर, पीठ पर पांच थपकियों से अपने स्नेह का संस्पर्श देनेवाले, दयानन्द के आशय के संवाहक महाशय धर्मपालजी आर्य के देहावसान से समाज व राष्ट्र की बडी क्षति हुई है। प्रभु परिवारजनों को दुख सहने की शक्ति प्रदान करें।

❖स्वामी सुमेधानन्दजी
(सांसद सीकर, राजस्थान)-

मसालों के बादशाह के नाम से विख्यात एम.डी.एच. के संस्थापक महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, आर्य समाज

के प्रति अनन्त श्रद्धा रखनेवाले महाशय धर्मपाल जी के निधन का समाचार जानकर अत्यंत कष्ट हुआ। वे अनेक संस्थाओं से जुडे रहे। खासतौर से आर्य समाज के प्रति उनकी विशेष श्रद्धा थी। वे अनन्य ऋषि भक्त थे। मेरे साथ लम्बे समय तक उन्होंने काम किया है। महर्षि दयानन्द निर्वाण स्थली अजमेर के वे अध्यक्ष थे और मैं वहां पर संरक्षक था! उदयपुर के अंदर 'सत्यार्थ प्रकाश न्यास' के वे अध्यक्ष थे और मैं वहां ट्रस्टी हूं। इस तरह से अनेक संस्थाओं में उनके साथ काम करने का मौका मिला है। गुरुकुल, गौशाला, विद्यालय, अनाथालय आदि अनेकानेक संस्थाओं को अपने हाथों से करोडों रूपयों का दान दिया। मैं उनके परिवार के प्रति सांत्वना व्यक्त करता हूं। परमात्मा परिवार को शक्ति दे और आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं को भी परमात्मा इस कष्ट को सहन करने की शक्ति दे, यही मेरी ईश्वर से कामना प्रार्थना है।

❖**डॉ.श्री सत्यपाल सिंह** (सांसद एवं कुलाधिपति, गुरुकुल कांगडी वि.वि.)-

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी का अकस्मात चले जाना मानव सेवा, साधना, त्याग तपस्या के एक युग का अंत प्रतीत हो रहा है। महाशय जी एक नेकदिल, जिंदादिल और समस्त मानव जाति का उत्साहवर्धन करनेवाले महापुरुष थे, आपने अपने जीवन में इतने नेकी के कार्य किए कि जिनकी गिनती करना अत्यंत कठिन कार्य है। आपके जीवन का प्रत्येक पल मानव सेवा को समर्पित था। आपने अपने जीवन में शुभ कर्मोंकी खेती करके अनेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं। इस दुख की घडी में मन अत्यंत व्यथित है, परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि भगवान महाशय जी की महान पुण्य आत्मा को शांति सद्गति की प्राप्ति हो और उनके परिवार को तथा उन्हें अपना आदर्श माननेवाले विश्व परिवार को इस असहनीय पीडा को सहन करने की शक्ति प्राप्त हो।

❖**योगगुरु स्वामी रामदेवजी** (पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार) -

एक तांगा चलानेवाला साधारण सा इन्सान जिसने शून्य से अपनी यात्रा शुरु की और हजारों करोडों रूपए का साम्राज्य खडा किया। उन्होंने आर्थिक साम्राज्य स्थापित करने के साथ ही अनाथ बच्चों के लिए, गुरुकुल, कन्या गुरुकुलों में सैकडों गरीब बच्चों को पढाने से लेकर, आदिवासी बच्चों की शिक्षा से लेकर के समाज सुधार और समाज कल्याण के अनेकानेक कार्यों में करोडों रूपयें दान दिए, ऐसे दानवीर व तपस्वी महात्मा को

मैं अपनी ओर से और समस्त साधु-सन्तों की ओर से हृदय से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

❖श्री सुरेशचंद्र आर्य
(प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्र.सभा)-

पूज्य महाशय जी के निधन से सम्पूर्ण आर्य जगत को गहरा आघात पहुंचा है। वह हम सबके हृदय सम्राट थे। आर्य समाज पर उनके उपकार सदैव अविस्मरणीय रहेंगें। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि। परमात्मा उनकी दिव्य आत्मा को सद्गति प्रदान करे और शोकाकुल परिवार को एवं समस्त आर्य जनों को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करें।

❖श्री प्रकाश आर्य
(मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्र.सभा)-

आज आर्यजनों के लिए एक बहुत ही बडा हादसा हो गया। आर्य समाज के निरन्तर सहयोगी, जिनका जीवन परमार्थ से परिपूर्ण था। महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त वेद के प्रति समर्पित और भामाशाह के रूप में समस्त भारत में और भारत के बाहर भी स्थापित होनेवाले महाशय धर्मपाल जी आज हमारे बीच नहीं रहे। उनका न रहना समाज की एक बहुत बडी क्षति है। करोडो लोगों का सम्बन्ध उनसे जुडा हुआ था और लाखों लोग उनसे लाभान्वित हो रहे थे। आज उनका दु:खद निधन निश्चित रूप से समाज, राष्ट्र और विशेषकर आर्य समाज के लिए एक बहुत बडी क्षति है। ९८ वर्ष की अवस्था में अमर हुए महाशय जी को शत्-शत् नमन...!

❖श्री विनय आर्य
(महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा)-

आज केवल देश की ही नहीं, विश्व की मानव जाति की एक महान सख्सियत हम सबको छोड करके चली गई है। एक ऐसा व्यक्तित्त्व जिस व्यक्ति की कोई दूसरी मिसाल वर्तमान में या पूर्व में ढूंढना असम्भव है, जिन्होंने अपने जीवन में एक-एक पल परोपकार के लिये जिया। पांच-सात दिन पहले मैं जब उनसे मिला, तो उन्होंने यही पूछा कि उस कार्य का क्या हुआ? वो कार्य कैसा चल रहा है? उस प्रोजेक्ट का क्या हुआ? एक ही बात उनके मन में थी कि मैं समाज का काम करता जाऊँ, व्यापार के साथ-साथ समाज के लिए मेरी जो जिम्मेदारी है। मैं उसको निभाता जाऊं...! मैं नहीं समझता कि राष्ट्रपति तक कोई ऐसा व्यक्तित्त्व होगा, जो उनके व्यक्तित्त्व से न केवल परिचित होगा, बल्कि अभिभूत भी होगा। उनको देखकर कई लोगों को, कई महानुभावों को कहते

हुए सुना था कि हमारी आयु भी ९८ वर्ष तक स्वस्थ रहते हुए हो पाएगी और वो जानते थे कि महाशय जी ९८ की आयु में ४ बजे उठना, पार्क जाना, सैर करना, डम्बल करना, योगासन, प्राणायाम करना, मालिश करना, चिडियों, कौओं और कुत्तों को दाना डालना, फिर फॅक्टरी जाना, लोगों से मिलना, शाम को फिर से भोजन करने के बाद पार्क जाना, लोगों के साथ फोंटो खिंचवाना, बच्चों से मिलना, सैर करना आदि उनकी विलक्षण दिनचर्या थी। आज मैं उनको नमन करता हूँ।

आचार्य स्वामी देवव्रतजी

(प्रधान संचालक, सार्व.आर्यवीर दल)- पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी सदा के लिए अमर हो गए, उन्होंने अपने जीवन में वेद के वचन 'सौ हाथों से कमाओं और हजारों हाथों से दान करो' को चरितार्थ किया। ऐसे महापुरुष जिन्होंने देश की युवा पीढी को दिशा प्रदान करने के लिए सार्वदेशिक आर्य वीर दल का हमेशा उत्साहवर्धन किया। पूज्य महाशय जी कहा करते थे कि, 'किशोरावस्था कच्चे घडे के समान होती है, उसे जैसा आकार दोगे, वह वैसा ही बन जाएगा। आर्य समाज का युवा संगठन सार्वदेशिक आर्यवीर दल महाशय जी को विनम्र श्रद्धाजलि अर्पित करता है!

विभिन्न नेताओं की श्रद्धांजलियाँ

पद्मभूषण महाशय धर्मपालजी के निधन पर उपरोक्त राजनेताओं एवं आर्यनेताओं के साथ ही राजनीतिक, सामाजिक, उद्योग, शिक्षा आदि क्षेत्र की कई हस्तियों ने ट्विटर, मोबाईल, ई-मेल, विभिन्न संचार साधनों तथा पत्रों के माध्यम से शोकसंदेश भेजकर अपने भावभीनी श्रद्धांजलियाँ समर्पित की है...। इनमें केंद्रीय मंत्रियों, विभिन्न राज्यों के राज्यपालों, मुख्यमंत्रियों, विभिन्न राजनैतिक दलों के नेता, कई पूर्व मुख्यमंत्रियों, मंत्रियों, विभिन्न प्रांतों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारी, विदेश के आर्यजन, सामाजिक उपक्रमों के संचालक, पत्रकार, साहित्यिक आदि भी सम्मिलित हैं।

महाराष्ट्र की आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी अपना शोकसन्देश भेजकर श्रद्धान्जलि अर्पित की और उनके कार्यों को स्मरण किया।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों की

महाशय धर्मपालजी को श्रद्धांजलियां..!

❒ **श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी**
(संरक्षक, म.आ.प्र.सभा) –

उद्योगविश्व के एक यशस्वी व पुरुषार्थी उद्योगपति तथा आर्य जगत् के ख्यातकीर्त दानवीर, महान् समाजसेवी व्यक्तित्त्व महाशय धर्मपालजी आर्य के चले जाने से हम सब की अपरिमित हानि हुई है। उनके देहावसान से एक पवित्र दानयज्ञ की प्रज्ज्वलिताग्नि बुझ गयी हैं। परोपकार, सेवा एवं त्याग से उन्होंने नये कीर्तिमान स्थापन किये थे।

सचमुच महाशय जी आयजनों की शान व मान थे। संसार में ऐसे दानी सत्पुरुष विरले ही होते हैं। आपका प्रेरक जीवन सामान्य से सामान्य मानव को भी स्फूर्ति प्रदान करनेवाला है। आजकल के कर्महीन, आलसी व निराश हुए युवकों में कुछ कर गुजरने की नवशक्ति प्रदान करने हेतु महाशयजी का क्रान्तिकारी जीवन अखण्डित रूप से नई दिशा देता रहेगा। ऐसे महात्मा को मेरी भावभीनी श्रद्धांजलि!

❒ **डॉ.श्री ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ**
(संरक्षक, म.आ.प्र.सभा) –

समाज, राष्ट्र व आर्यजाति के लिए अपनी धनदौलत लुटानेवाले पूजनीय महाशय धर्मपालजी के निधन का समाचार सुनकर बहुत दुःख हुआ। आर्यजगत् की गतिविधियों को वृद्धिंगत करने में उनका सर्वाधिक योगदान रहा है। मनसा–वाचा–कर्मणा वे आर्य समाज के लिये जिये। इसी कारण उनकी जीवनयात्रा सफल रही। महाराष्ट्र के आर्य प्रतिनिधि सभा को महाशयजी का बहुत बडा सहयोग रहा है। 'वैदिक गर्जना' मासिक पत्रिका का निरन्तर प्रकाशन होता रहे, इसलिए उन्होंने आर्थिक योगदान दिया। महाराष्ट्र प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में आप सोत्साह सम्मिलित हुए और काफी दान प्रदान किया। परली–वै. स्थित गुरुकुल में भी आपने वानप्रस्थाश्रम भवन खडा किया है। इसीलिए महाराष्ट्रवासी आर्यजन महाशयजी के ऋणी रहेंगें।

साथ ही भारत के विभिन्न स्थानों पर गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम, अनाथालय, विद्यालय, अस्पताल खोलें और उनके लिए आर्थिक स्त्रोत बहाते रहे। वैदिक

धर्म के प्रचार हेतु आपका अनूठा योगदान रहा है। अपनी शुद्ध कमाई प्राप्त धन को उन्होंने मानवकल्याण व वेदधर्म के प्रचार में लगाकर बहुत बडा ऐतिहासिक कार्य किया है.. जिसे हम भूल नहीं पायेंगें।

वे एक ऐसे महापुरुष थे कि, जिनका समग्र जीवन सामाजिक, राष्ट्रीय कार्यों के लिए व्यतीत हुआ। सचमें उनका क्रांतिकारी जीवन सबके लिए एक दीपस्तंभ बनेगा। **'शतहस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर।'** इस वेदोक्ति को आपने पूरी तरह से जीवन में उतारा था। सही अर्थों में महाशय जी अपने इन सत्कर्मों द्वारा संसार में अजरामर हो गयें। उन्हें शत् शत् वंदन...! समस्त गुलाटी (आर्य) परिवार के प्रति हमारी हार्दिक शोक संवेदना!

❐ श्री योगमुनिजी

(प्रधान, महाराष्ट्र सभा) -

महाशयजी आर्य समाज के लिए एक समर्पित व्यक्तित्त्व थे। आर्य सिद्धान्तों के प्रति उनकी बहुत बडी निष्ठा थी। सही अर्थों में वे आर्य समाज के लिए वरदान सिद्ध हुए। आर्य जगत् में अनेकों संस्थानों को उन्होंने दिल खोलकर तन्मयता के साथ दान दिया है। यह ऐतिहासिक कार्य आजतक कोई कर नहीं पाया है। औरंगाबाद में आयोजित राज्यस्तरीय आर्य महासम्मेलन में मैं उनके सान्निध्य में रहा। उनकी उपस्थिति में ही मेरी वानप्रस्थ दीक्षा सम्पन्न हुई। साथ ही दिल्ली के आर्य महासम्मेलन में भी उनके समीप बैठने का सुअवसर प्राप्त हुआ। यह मेरे लिए सौभाग्य का विषय है। उनके समाजसेवी कार्यों को आर्यजगत् कभी भूला नहीं पायेगा। परमात्मा उनकी दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

❐ श्री राजेन्द्र दिवे

(मन्त्री, महाराष्ट्र सभा)

वन्दनीय महाशय धर्मपालजी सही अर्थों में धर्म का पालन करनेवाले ऋषि दयानन्द के अनुपम शिष्य थे। ईश्वर पर उनकी अगाध श्रद्धा व दृढ निष्ठा थी। अपने एम.डी.एच. मसाला कम्पनी से जो भी धनलाभ होता रहा, उसे उन्होंने आर्य समाज के कार्य के लिए समर्पित किया। आर्य जगत् के गुरुकुलों, विद्यालयों, रुग्णालयों तथा अन्य सेवाभावी संस्थानों को आपने सहृदयता पूरा सहयोग दिया। प्रतिदिन अग्निहोत्र करनेवाले तथा पंच महायज्ञों का पालन करनेवाले महाशयजी सच में आर्यत्व की मिसाल थे। आपने महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा को लगभग ३.५ लाख रूपये प्रदान कर महाराष्ट्र में वैदिक गर्जना प्रकाशन व वेद प्रचार के लिए अपना अनूठा योगदान दिया है। हम इस पवित्र आत्मा के ऋणों

भाव से अपने धन को आर्य समाज के कार्यों के लिए प्रदान किया।

महर्षि दयानन्द के १२५ वे निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में जब हमने सम्भाजीनगर (औ.बाद) में दि.३०-३१ अक्टूबर व १ नवम्बर २००९ को महाराष्ट्र आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया था, तब महाशयजी ने हमारी विनती के स्वीकार कर इसमें उत्साह के साथ पधारे। इस सम्मेलन की व्यवस्था व मंच की सुन्दर साजसज्जा को देखकर वे बहुत ही प्रभावित हुए। यहाँ का आर्यमय वातावरण देखकर वे एक दिन के बजाय पूरे तीन दिनों तक सम्मेलन में रहे और उनके पवित्र करकमलों से अनेकों विद्वानों, सन्यासियों, वानप्रस्थियों व कार्यकर्त्ताओं का सम्मान, अभिनन्दन हुआ। इस सम्मेलन के लिए आपने हमें रू.३,३३,३३३/- का पावन दान देकर हमें कृतार्थ किया। जब सम्भाजीनगर में भव्य जुलूस निकाला गया, तब महाशयजी एवं पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी को अलग-अलग दो रथों में बिठाया गया।

रथ में संवार प्रसन्नता की मूर्ति महाशयजी को देखकर नगरवासी बहुत ही आनन्दित हुए। रास्तें में जो भी आगे आता, उनसे हाथ मिलाते और उन्हें शुभाशीष देते। ऐसे महामना दानवीर महाशयजी के पधारने से हमारा महासम्मेलन सफल हुआ और इसकी यशस्वीता में चार चाँद लग गये। ऐसे महात्मा को हमारा श्रद्धा से वन्दन और श्रद्धांजलि!

❒ श्री आनन्दमुनि वानप्रस्थ
(उपप्रधान, महाराष्ट्र सभा)

देश व जाति के लिए सर्वस्व न्योछावर करनेवाले उद्योगपतियों में महाशयजी का नाम गौरव के साथ लिया जायेगा। नानाविध कष्टों को सहन करते हुए उनकी जीवनयात्रा आरम्भ हुई। असंख्य विघ्न-बाधायें आयी, किन्तु वे कदापि घबराये नहीं। सुख-दु:ख को समान समझते हुए वे स्थितप्रज्ञ बन गये और सदैव आगे बढते रहे। ईश्वर पर दृढ विश्वास, धर्माचरण व प्रबल पुरुषार्थ के फलस्वरूप उनकी एम.डी.एच. कंपनी यश के शिखर पर पहुंच गयी। फलस्वरूप प्रचुर मात्रा में धनैश्वर्य प्राप्त हुआ, लेकिन उनमें कभी गर्व या अभिमान नहीं देखने मिला। अपनी इस सम्पदा को उन्होंने आर्य समाज की विभिन्न गतिविधियों में बढाने में लगाया। अपने धनको सर्वोत्तम कार्यों में लगाने से उनका धन व जीवन ये दोनों सफल हो गये। ऐसे दानवीर आर्यप्रवर पद्मभूषण महाशयजी को विनम्रभाव से अभिवादन...!

❐ श्री प्रमोदकुमार तिवारी
(उपप्रधान, महाराष्ट्र सभा)

महाशयजी के कार्यों का किन शब्दों में बखान करें? आर्य समाज के लिए वे सम्पदा के आगर रहे। उनका महान जीवन सबके लिए प्रेरणास्थान है। छोटे से परिवार में जन्म लेकर आपने इतना बडा कार्य किया। दृढ निश्चय, लगन, प्रयत्नशीलता, ईश्वर पर अटल विश्वास एवं आर्य समाज के विचारों पर अनूठा आचरण इन सभी के कारण आप सभी के लिए दीपस्तम्भ बन गये। ऐसे महात्मा को हमारा कोटिश: नमन तथा भावपूर्ण श्रद्धांजलि..!

❐ श्री लखमसीभाई वेलानी
(उपमन्त्री, महाराष्ट्र सभा)

आर्य जगत् के इस समय के दानवीर भामाशाह श्री महाशय धर्मपालजी के इहलोक से चले जाने से हम सब की बहुत बडी क्षति हुई है। उनके माध्यम से आर्य समाज का कार्यक्षेत्र सदैव बढताही गया। महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा को सुशोभित करने के लिए आपने दिल खोलकर दान दिया। केरल के कोझीकोडा इस स्थान पर वैदिक धर्म का अनुसंधान केन्द्र उद्‌घटित कर महाशयजी ने बहुत बडा पुण्य कार्य किया। आपके कारखानों में आज भी प्रतिदिन यज्ञ होता है, जिसमें सभी कर्मचारी श्रद्धाभाव से सम्मिलित होते हैं। उनका आदर्श जीवन निश्चित ही परिवार, समाज एवं राष्ट्र के निर्माण हेतु बहुत ही प्रेरक सिद्ध होगा। इस कर्मयोगी को हमारी भावभीनी श्रद्धांजलि एवं अभिवादन...!

❐ श्री शंकरराव बिराजदार
(उपमन्त्री, महाराष्ट्र सभा)

बचपन से ही धर्म के पथ पर चलनेवाले एवं महर्षि दयानन्द की वैदिक विचारधारा को अपने जीवन का अंग बनानेवाले महाशय धर्मपालजी हम सबके लिए प्रेरणा के स्त्रोत रहे हैं।

आज के युग में आर्य समाज को इतना बडा योगदान देनेवाले श्री महाशयजी हम सब के महान आदर्श हैं। राजपूत घरानों के राजाओं को मुघलों के साथ संघर्ष करते हुए जब प्रचुर मात्रा में धन व अन्य साधनों की आवश्यकता पडी, तब एक भामाशाह सामने आये और उन्होंने पूरा सहयोग दिया। उसी भाँति आर्य समाज को आगे बढाने के लिए तथा वैदिक धर्म की पताका को जग में फैलाने के लिए महाशय धर्मपालजी आगे आये। उन्हीं के पूर्ण सहयोग से आज आर्य समाज का कार्यक्षेत्र व्यापक बन गया है। उनके इस योगदान के लिए हम कृतज्ञ है। उन्हें मेरा नमन!

❒ प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी
(उपमन्त्री, महाराष्ट्र सभा)

सम्पूर्ण भारत वर्ष में वैदिक धर्म के प्रचार हेतु करोडों रूपयों का दान देनेवाले तथा मनसा-वाचा-कर्मणा आर्य सिद्धान्तों के अनुसार जीवन बितानेवाले महाशय धर्मपालजी सही अर्थों में तपोनिष्ठ आर्यनेता रहें। 'शून्य से विश्व' का निर्माण करनेवाले धर्मपालजी ने केवल आर्य समाज के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि सारे विश्व में अपने आदर्श व्यक्तित्त्व के द्वारा नयी पहचान दी है। विश्वस्तर के प्रसिद्ध उद्योगपति और वह भी आर्य समाज के विचारों पर चलनेवाले सच्चे दयानन्द भक्त! दीन-दुखियों के कष्टों को देखकर उनका मन बहुत ही पिघल जाता था। सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों को बढाने में आप सदैव अग्रणी है। सन २००८ में जब मॉरीशस में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न हुआ, तब महाशयजी उस सम्मेलन में चारों दिन तक रहें। मेरा सौभाग्य यह कि मुझे उनका नजदीकी से सहवास मिला। ऐसे उदारमना दानवीर को शत-शत वंदन...!

❒ श्री व्यंकटेश हालिंगे
(अधिष्ठाता, महाराष्ट्र आर्यवीर दल)

आर्यवीर दल के राष्ट्रीय शिविरों के समापन समारोह में प्रायः महाशयजी के दर्शन होते थे। जब भी मैं उनके पास जाता, तब वे पीठ थप-थपाकर मुझे आशीर्वाद देते और कहते - 'आर्यसमाज के कार्यों को बढाओ, आर्यवीर दल का अधिकाधिक विस्तार करो।' अपने भाषण में वे 'मैं सामान्य व्यापारी से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का उद्योगपति कैसे बना?' इसका वर्णन कर वे आर्यवीरों को आगे बढने की प्रेरणा देते थे। उनके पावन संदेश से आर्यवीरों में नवचेतना का संचार होता था। युवाओं को वे सदैव क्रांतिकारी कार्यों के लिए प्रोत्साहित करते हुए देश व जाति के लिए आगे आने का आवाहन भी करते थे। ऐसे आर्यवीरों व युवाओं के प्रेरणास्थान महाशय धर्मपालजी को श्रद्धावनत नमन...!

❒ श्री माधवराव देशपांडे
(पूर्व मन्त्री, महाराष्ट्र सभा)

वैदिक सिद्धान्तों का पालन, आर्य समाज के प्रचार में आर्थिक सहयोग देना तथा नयी पीढी में नवोत्साह भर देना इन कार्यों में महाशय धर्मपालजी सदैव आगे रहते थे। उनकी लम्बी आयु(९८) का आधार शुद्ध आहार, नियमितता, व्यायाम एवं प्राणायाम रहा है। लंबी उम्र में भी उनका उत्साह युवाओं को भी लज्जित करनेवाला था। अपना सारा धन वैभव वेद धर्म के प्रसार में

लगानेवाले महादानी कर्ण के समान ऐसे महाशय धर्मपालजी आर्य समाज के इतिहास में सर्वोच्च श्रेणी में गिने जायेंगें। जब भी उनके सम्मुख कोई दीन-दुखी या गरीब व्यक्ति आता, तो वे उसे खाली हाथ कभी नहीं लौटाते। प्रतिदिन अखण्डरूप से दान देना यह उनका व्रत था। ऐसे तपस्वी परोपकारी व्यक्तित्त्व को पवित्र अंत:करण से श्रद्धांजलि..!

❐ श्री जुगलकिशोर लोहिया

(प्रधान, आर्य समाज, परली)

देश, धर्म व आर्य समाज के लिए अपना धनैश्वर्य लुटानेवाले महाशय धर्मपालजी एक अद्‌भुत मिसाल थे। आपका सारा जीवन आर्य विचारों को प्रचारित करने में व्यतीत हुआ है। हमारी आर्य समाज द्वारा संचालित स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम में सन् २०१२-१३ में आपद्वारा प्रदत्त सोलह लाख रुपयों से एक विशाल वानप्रस्थाश्रम बन गया। इसमें निवास करनेवाले मुनिजन स्वाध्याय, चिंतन व अध्ययन के माध्यम से अपना वानप्रस्थ जीवन सफल कर रहे हैं। महाशयजी के उपकारों को हम कभी विस्मृत कर पायेंगें। उनके उद्देश्यों के अनुसार इस 'महाशय धर्मपालजी एम.डी.एच. आर्य वानप्रस्थाश्रम की गतिविधियाँ चलती रहेगी। महाशयजी को कृतज्ञतापूर्वक अभिवादन...!

❐ श्री सोममुनिजी

(एम.डी.एच.वानप्रस्थाश्रम प्रमुख, परली)

अपनी पवित्र कमाई से आर्यजगत् को बडे पैमाने पर धनदान करनेवाले महाशय जी हम सबके लिए कीर्तिस्तम्भ रहे हैं। एक ही व्यक्ति की सर्वोत्तम दानशूरता से आज देश के कोने-कोने में आर्य समाज का इतना बडा काम हो रहा है। जगह-जगह वानप्रस्थाश्रम खोले गये, जहाँ पर मुनिजन, साधक लोग स्वाध्याय, ध्यान, धारणा में जीवनयापन कर रहे हैं। सचमुच यह कितना महान कार्य है? संसार में जब ऐसे उदारमना लोग होते हैं, तभी तो अनेकों साधकों का अध्यात्मपथ प्रशस्त होने में सहयोग मिलता है। महाशयजी के कारण ही तो साधु महात्माओं को आश्रयस्थल प्राप्त होता है, यह बहुत बडे गौरव की बात है। हम आज उन्हीं द्वारा निर्मित वानप्रस्थाश्रम में रहकर अध्यात्ममय जीवन बीता रहे हैं। परमात्मा महाशय धर्मपालजी की स्वर्गस्थ आत्मा को सद्‌गति प्रदान करें, यही कामना..!

❐ श्री विज्ञानमुनिजी

(चिकित्साप्रमुख, परली)

महाशयजी की कर्तृत्त्वभावना को देखकर हमारा हृदय पुलकित हो उठता

है। भारत देश में आप जैसे दानवीरों के सहयोग से ही धर्मकार्य चल रहे हैं। उसमें भी आर्य समाज के सैद्धांतिक कार्यों को फैलाने में महाशय जी का धन काम आ रहा है। परली स्थित महाशय धर्मपालजी एम.डी.एच. वानप्रस्थाश्रम यह सम्प्रति महाराष्ट्र का एकमेव '**मुनिसदन**' है। जहाँ पर सारी सुख-सुविधायें उपलब्ध हैं। फलस्वरुप हमारा साधनामय जीवनमार्ग प्रशस्त हो रहा है। युग के साथ चलनेवाले आर्य समाज के इस तपोधन के कारण ही आर्य जगत के साधु-सन्यासी, वानप्रस्थी गुरुकुलों के आचार्य तथा विद्वानों को पूरी सहायता मिलती रही है। ऐसे उदारमना महात्मा को हमारा शतश: अभिवादन !

महाशय धर्मपालजी के पावन दान से देश में चल रही

धर्म, संस्कृति, संस्कार, स्वास्थ्य एवं शिक्षा सेवाएं

आधुनिक परिवेश में शिक्षा के मायने बदलते जा रहे हैं। शिक्षा अर्थ डिग्री, डिप्लोमा लेकर जीविका मात्र कमाना लक्ष्य बनता जा रहा है। महाशय जी ने वैदिक धर्म-संस्कृत और संस्कृति के संरक्षण के लिए जहां एक तरफ गुरुकुलों की स्थापना, संचालन और पूर्व समय से चल रहे गुरुकुलों को सहयोग देकर गति प्रदान की है, वहीं आदिवासी क्षेत्रों में जहां आर्य समाज के अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा बालविकास के कार्य चल रहे थे, वहां नये आयाम स्थापित किए।

भारत के कई प्रांतों में गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आदिवासी क्षेत्रों में स्कूल, विद्यालय, वेद शोध, संस्थान निर्मित कर एक नया इतिहास बनाया है। जहां पर बच्चों का सर्वांगिण विकास हो रहा है तथा भारत के उज्वल भविष्य की तस्वीर तैयार हो रही है। साथ ही विभिन्न अस्पतालों के माध्यम से स्वास्थ्य सेवा का यज्ञ भी चल रहा है। छोटे बच्चों की शिक्षा हेतु विभिन्न स्थानों पर शिशु मंदिर/विद्यालय भी शुरु हैं।

* धर्म, संस्कृती सेवा का अखंड यज्ञ *

१) महाशय धर्मपाल आर्य संवाद केंद्र नई (दिल्ली)

२) महाशय धर्मपाल छात्रावास भवन, बामनिया (म.प्र.)

३) महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद अनुसंधान केंद्र कालीकट (केरल)

४) महाशय धर्मपाल स्थाई निधि, गुरुकुल झज्जर (हरियाणा)

५) महाशय धर्मपाल दयानंद विद्या निकेतन, भामल, झाबुआ (म.प्र.)

६) महाशय धर्मपाल प्रवेशद्वार, आर्य अनाथालय (हरियाणा)

७) महाशय धर्मपाल एमडीएच दयानद आर्य विद्यानिकेतन, बामनिया जि.झाबुआ(म.प्र.)
८) महाशय धर्मपाल संस्कृत भवन, गुरु विरजानंद संस्कृतकुलम्,हरि नगर(नई दिल्ली)
९) म. धर्मपाल,एमडीएच दयानन्द आर्य विद्यानिकेतन, धनश्री जि.कार्बी आंग्लांग(असम)
१०) महाशय धर्मपाल एमडीएच सभागार, आर्य महिला आश्रम,राजेंद्रनगर(नई दिल्ली)
११) महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. विद्यालय विंग, गुरुकुल कांगडी हरिद्वार (उत्तराखंड)
१२) महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द विद्या निकेतन, देवघर (झारखण्ड)
१३) महाशय धर्मपाल ओपन एअर थिएटर, भिवानी जेल (हरियाणा)
१४) महाशय धर्मपाल वेद अनुसंधान भवन, करनाल (हरियाणा)
१५) माता लीलावंती सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर (राजस्थान)
१६) महाशय धर्मपाल स्थाई निधि, गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
१७) महाशय धर्मपाल सांस्कृतिक यज्ञ केंद्र (राजस्थान)
१८) माता लीलावंती आर्य कन्या गुरुकुल, पिल्लूखेडा (हरियाणा)

❋ मानव सेवा के प्रमुख कीर्ति स्तंभ ❋

१) आर्य समाज, जहांगीरपुरी (नई दिल्ली)
२) एम.डी.एच. संजोग सेवा कीर्तिनगर (नई दिल्ली)
३) महाशय धर्मपाल सेवा भवन, आर्य समाज डी.सी.एम.रेलवे कालोनी (नई दिल्ली)
४) सत्यार्थप्रकाश स्तम्भ एमडीएच सभागार आर्यसमाज जनकपुरी बी ब्लाक(नई दिल्ली)
५) महाशय धर्मपाल एमडीएच सभागार, आर्य समाज जनकपुरी बी ब्लाक(नई दिल्ली)
६) महाशय धर्मपाल एम.डी.एच.वानप्रस्थ आश्रम, परली वैजनाथ, जिला बीड (महाराष्ट्र)
७) महाशय धर्मपाल यज्ञशाला, आर्य समाज त्रिनगर (नई दिल्ली)
८) महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. सभागार, आर्य समाज नारायण विहार (नई दिल्ली)
९) महाशय धर्मपाल बनवासी सभागार, आर्य समाज तिहाडग्राम (नई दिल्ली)
१०) महाशय धर्मपाल एम.डी.एच सभागार, आर्य समाज कीर्ति नगर (नई दिल्ली)
११) एम.डी.एच. वृद्ध सेवा सभागार, आर्य महिला आश्रम,राजेंद्र नगर (नई दिल्ली)
१२) महाशय धर्मपाल भवन, आर्य समाज खजूरी खास (नई दिल्ली)
१३) महाशय धर्मपाल स्वावलम्बन गृह, सिरसा जेल, सिरसा(हरियाणा)
१४) महाशय धर्मपाल अंतर्राष्ट्रीय अतिथिगृह ग्रेटर कैलास-१ (दिल्ली)
१५) एम.डी.एच. परिसर निर्वाण न्यास अजमेर (राजस्थान)
१६) एम.डी.एच. पार्क नागौर (राजस्थान)

* स्वास्थ्य सेवा का अखंड यज्ञ *

१) माता लीलावंती लैबोरेट्री (नई दिल्ली)
२) माता चन्नन देवी हास्पिटल, सी-१ जनकपुरी (नई दिल्ली)
३) महाशय संजीव कुमार धर्मार्थ औषधालय, गांव गुल्लरवाला, करसौली तहसील, नालागढ (हिमाचल)
४) ज्योति आप्थलंमिक लेजर सैंटर (नई दिल्ली)
५) महाशय धर्मपाल हृदय संस्थान सी-१, जनकपुरी (नई दिल्ली)
६) महाशय संजीव गुलाटी आरोग्य केंद्र-ऋषिकेश (उत्तराखंड)
७) महाशय धर्मपाल एम.डी.एच.आरोग्य मंदिर सेक्टर-७६ फरीदाबाद(हरियाणा)
८) एम.डी.एच. न्यूरोसाईंस संस्थान (नई दिल्ली)

* शिक्षा सेवा का अखंड यज्ञ *

१) महाशय चुन्नीलाल सरस्वती बाल मंदिर, हरिनगर(नई दिल्ली)
२) माता लीलावंती सरस्वती विद्या मंदिर, हरिनगर (नई दिल्ली)
३) महाशय धर्मपाल विद्या मंदिर, सुभाष नगर (नई दिल्ली)
४) एम.डी.एच. इंटरनेशनल स्कूल, सेक्टर-६, द्वारका (नई दिल्ली)
५) एम.डी.एच. इंटरनेशनल स्कूल, जनकपुरी (नई दिल्ली)
६) माता लीलावंती सरस्वती शिशु मंदिर टैगोर गार्डन (दिल्ली)
७) माता लीलावंती श्रीकृष्ण वैदिक कन्या इंटर कालेज खुशीपुरा, मथुरा, (उत्तरप्रदेश)
८) आकांक्षा आई.वी.एफ. सैंटर(नई दिल्ली)
९) महाशय धर्मपाल विद्या मंदिर, ढांसा(दिल्ली)
१०) महाशय धर्मपाल कन्या छात्रावास गुरुकुल, चोटिपुरा जिला मुरादाबाद (उ.प्र.)
११) एम.डी.एच. स्कूल बेदगी (कर्नाटक)
१२) महाशय संजीव पब्लिक स्कूल, उत्तरकाशी (उत्तराखंड)

उपरोक्त सभी सेवाभावी उपक्रमों की सूची ३ वर्ष पूर्व की है। इनमें सम्प्रति और भी अधिक बढोतरी हो चुकी है।

पद्मभूषण महाशय धर्मपालजी ने मानव सेवा क्षेत्र में जो कीर्ति स्तम्भ बनाये हैं, वे अपने आप में भारत ही नहीं, विश्व के प्रेरणास्तम्भ हैं। आपके द्वारा किये गये समाज सेवा के कार्य अनगिनत हैं और प्रत्येक सेवा कार्य रचनात्मक है, जिससे मानव समाज में जागृति की लहर उत्पन्न हो गयी है, मानव समुदाय आशान्वित, गौरवान्वित होकर लाभान्वित हो गया है।

महाशयजी अमर रहे..!

कर्मयोगी महात्मा को भावपूर्ण अन्तिम विदाई

दिवंगत पद्मभूषण महाशयजी के पार्थिव पर अत्यंत शोकाकुल वातावरण में पूर्ण वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार किये गये। 'जब तक सूरज चांद रहेगा, महाशयजी का नाम रहेगा', 'महाशयजी की जय' के नारों के बीच वेदमन्त्रों की ध्वनियाँ इस त्यागी, तपस्वी, महात्मा की अन्तिम यात्रा में गूंजती रहीं। दिल्ली स्थित श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय, गौतम नगर के ब्रह्मचारियों ने मन्त्रपाठ किया। महाशयजी के सुपुत्र श्री राजीव गुलाटी ने एवं परिजनों ने अपने पिता के नश्वर देह की चिता को शोकविह्वल होते हुए अग्नि प्रदान की। तत्पश्चात् शुद्ध घृत व सामग्री की सश्रद्ध आहुतियां पडती रही। कोरोना का संकट सिरपर मंडराते हुए भी नियमों का पालन करते हुए महाशयजी पर प्रेम करनेवाले अनेकों स्नेहीजन इस अन्तेष्टि में सम्मिलित हुए। वैदिक विद्वान, संन्यासी, राजनेता, उद्योग जगत् की मान्यवर हस्तियां तथा अनेकों आर्यजनोंने इस कर्मयोगी दिव्यात्मा की अन्तिम यात्रा व संस्कार में भाग लिया और सभी ने दु:खभरी नम आँखों से अपने प्रिय आर्य व्यक्तित्त्व को अन्तिम विदाई दी।

* श्रद्धांजलि सभा *

मृत्यु के दस दिन बाद दि.१३ दिसम्बर को एस.डी. पब्लिक स्कूल के प्रांगण में पद्मभूषण महाशय धर्मपालजी की 'श्रद्धांजलि सभा' सम्पन्न हुई। एम.डी.एच. परिवार तथा विभिन्न राजनेताओं, आर्यनेताओं, शिक्षाविदों तथा आर्य कार्यकर्त्ताओं ने भारी संख्या में उपस्थित होकर अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलियां प्रदान की। इस अवसर पर आयोजित पारिवारिक यज्ञ में उनके सुपुत्र श्री राजीव गुलाटी, पुत्रवधू श्रीमती ज्योति गुलाटी, सुपुत्रियां, दामाद और उनके बच्चों सहित सश्रद्ध आहुतियां दी। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी सम्पूर्णानन्दजी, आचार्या सुकामाजी, आचार्य ऋषिपालजी, आचार्य शिवा शास्त्रीजी के सुयोग्य निर्देशन में यह बृहद् यज्ञ पूरा हुआ। इस अवसर पर आर्यकन्या गुरुकुल रूडकी की ब्रह्मचारिणियों ने वेदपाठ किया। श्री अंकित उपाध्याय एवं साथियों ने भजन प्रस्तुत किये। कोरोना बिमारी के मद्देनज़र सम्पूर्ण सुरक्षा का पूरी तरह से ध्यान रखा गया। बहुत ही आकर्षक सज्जा एवं सुन्दर ढंग से फूलों से सजाये गया महाशयजी का

चित्र हर एक के मन को आकर्षित कर रहा था। इसी बीच लगातार तीन घण्टे तक लाईन में खडे रहकर हजारों महानुभावों ने अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित की।

*** शान्तियज्ञ एवं पगडी रस्म ***

महाशयजी के मृत्यूपरान्त तेहरवे दिन दि.१५ दिसम्बर को आर्य आडिटोरियम ईस्ट ऑफ कैलाश में सायं. शान्तियज्ञ व पगडी रस्म कार्यक्रम का आयोजन हुआ। पं.ऋषिपालजी शास्त्री के ब्रह्मत्व शान्तिदेवी आर्य कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने मन्त्रपाठ किया। यजमान के रूप में महाशयजी के सुपुत्र श्री राजीवजी गुलाटी, बहु श्रीमती ज्योति गुलाटी, तथा सुपौत्रियां वान्या एवं हिरण्या ने अपने गुलाटी परिवार तथा आर्य जगत् के आधारस्तम्भ की शान्ति व सद्गति की कामना करते हुए भावविभोर होकर आहुतियां अर्पित की।

तत्पश्चात् दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनयजी आर्य के कुशल संयोजन में श्रद्धांजलि सभा हुई, जिसमें पूर्व केन्द्रीय राज्यमन्त्री डॉ.सत्यपाल सिंहजी, सांसद स्वामी सुमेधानन्दजी, स्वामी सम्पूर्णानन्दजी, तथा अन्य महानुभावों ने अपनी सारगर्भित भावनाओं को अभिव्यक्त करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किये। डॉ.सत्यपालजी ने कहा, 'ईमानदारी से व्यापार करनेवाले दानवीर महाशयजी सफेद कपडों में महात्मा थे। अपने परोपकारमय जीवन से उन्होंने आर्य जगत् की व दीन-दुखियों की बहुत बडी सेवा की हैं। वे जीवनमुक्त साधक थे। उनके सच्चरित्र की खुशबू संसार में सदैव फैलती रहेगी।' स्वामी सुमेधानन्दजी ने कहा, 'महाशयजी विनम्रता की साक्षात मूर्ति थे। सामान्य विद्वान् व संन्यासी के प्रति उनका नम्रतापूर्वक व्यवहार उनकी कर्मनिष्ठ विद्वत्ता को प्रकट करता है। वैचारिक परिवार के हम सभी आर्य सदस्य उनके अधूरे कार्य को आगे बढावे।'

तत्पश्चात् आचार्य स्वामी देवव्रतजी, स्वामी प्रणवानन्दजी, आचार्य राजेन्द्रजी, स्वामी सम्पूर्णानन्दजी, दिल्ली आर्य प्र.सभाके प्रधान श्री धर्मपालजी आर्य आदियों की उपस्थिति में श्री राजीव गुलाटी एवं श्रीमती ज्योति गुलाटी पर अपने एक महान पिता की पारिवारिक, सामाजिक, व्यापारिक व समस्त सेवाओं की जिम्मेदारियों भार 'पगडी' के रूप में सौंप दिया।

अन्त में इन दोनों ने उपस्थित सभी महानुभावों का आभार प्रकट करते हुए अपने पिताश्री के विचार व कार्यों का अनुकरण करने का संकल्प लिया।

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

श्रेष्ठ मानव बनों ! वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. ३३३/र.नं.८/टी.इ. (७)१८७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

मानव कल्याणकारी उपक्रम

- ○ 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- ○ आर्य समाज दिनदर्शिका
- ○ पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- ○ आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- ○ पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- ○ प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- ○ पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- ○ मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- ○ स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- ○ सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- ○ सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- ○ विद्यार्थी सहायता योजना
- ○ सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- ○ स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- ○ मानवजीवन निर्माण अभियान विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- ○ शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- ○ स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- ○ शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- ○ वैदिक साहित्य भेट योजना
- ○ पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- ○ वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- ○ आपत्कालीन सहायता योजना
- ○ पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- ○ गौ-कृषि सेवा योजना
- ○ स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- ○ सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

॥ओ३म्॥

माझा मराठीची बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें। मेळवीन॥ (संत ज्ञानेश्वर)

* मराठी विभाग *

* उपनिषद संदेश *

सर्वांचे मूलभूत कारण-परमेश्वर!

स विश्वकृद्विश्वविदात्मयोर्निज्ञः कालकालो गुणी सर्वविद्यः।
प्रधानक्षेत्रज्ञपतिः गुणेशः संसारमोक्षस्थितिबन्धहेतुः॥

अर्थ – तो ईश्वर सर्वांचे सृजन करणारा (सृष्टा), सर्वांना जाणणारा (ज्ञाता), सर्वांतर्यामी, प्रेरक व सर्वांचे कारण आहे. तसेच तो ज्ञानरूपी काळाचाही अंत करणारा व रचणारा आहे. शुद्धत्व, निष्पापत्व इत्यादी गुणांनी परिपूर्ण असून सर्वांना नेहमी प्राप्त होणारा आहे. प्रकृती व जीव यांचा पालक, रक्षक व सत्व-रज-तम या गुणांचा स्वामी असून प्रवाहरूप या जगाच्या प्रवृत्ती, मोक्षप्राप्ती, प्रलय आणि उत्पत्तीचे कारण आहे. **(श्वेताश्वेतर उपनिषद ६/१६)**

* दयानंद वाणी *

'सत्यार्थ प्रकाश'मुळे सत्य व असत्याचे विवेचन!

'सत्यार्थ प्रकाश' या ग्रंथात सत्य धर्माचे मंडन व असत्याचे खंडन आम्ही केले आहे. हे सर्वांना कळावे हाच आमचा हेतू आहे. माझी जेवढी बुद्धी व विद्या आहे, त्यांच्या आधारे पौराणिक मत, जैन, ख्रिस्ती व इस्लाम या चार पंथांचे मूळ ग्रंथ वाचून मला जे कांही समजले, ते सर्वांसमोर मांडणे हे उत्तम कार्य आहे, असे मी समजतो. कारण या मतांच्या प्रचारामुळे वेदांचे ज्ञान नाहीसे झाले तर, ते पुन्हा सहजासहजी मिळणार नाही. म्हणूनच पक्षपात सोडून या (सत्यार्थ प्रकाश) ग्रंथाचे वाचन लोकांनी केले तर त्यांना सत्य काय व असत्य काय? ते सहज समजेल. त्यानंतर सर्वांना आपापल्या समजुतीप्रमाणे सत्य मताचे ग्रहण करणे व असत्य मताचा त्याग करणे सोपे जाईल. यांपैकी पुराणादी ग्रंथातून विविध शाखांच्या रूपाने अनेक पंथ आर्यावर्त्तात प्रचलित झाले आहेत, त्यांचे गुणदोष संक्षपाने ११व्या समुल्लासात वर्णन केले आहेत. **(सत्यार्थ प्रकाश–उत्तरार्ध अनुभूमिका१)**

टांगेवाला ते मसाल्यांचे बादशहा

थक्क करणारा महाशयजींचा प्रेरक जीवन प्रवास

- अजिंक्य आचार्य

जिद्द, चिकाटी , धैर्य व प्रयत्नांची पराकाष्ठा या बाबी अंगी असतील तर एक सामान्य माणूस देखील यशाच्या उच्च शिखरावर पोहोचतो, याचे ज्वलंत उदाहरण म्हणजे नेहमी टीव्हीवरील जाहिरातीतून झळकणारे वयोवृद्ध व्यक्तिमत्व महाशय धर्मपालजी ! दि.३ डिसेंबर २०२० रोजी वयाच्या ९८ व्या वर्षी त्यांनी जगाचा निरोप घेतला. आपल्या अलौकिक कर्तृत्वातून त्यांनी एम.डी. एच. या मसाले कंपनीचा उत्कर्ष वाढविला आणि औद्योगिक क्षेत्रात देश-विदेशात मानाचे उच्च स्थान प्राप्त केले .उद्योग व व्यापार क्षेत्राबरोबरच सामाजिक, शैक्षणिक व सेवाभावी कार्यात देखील त्यांनी मोलाची भूमिका बजावली होती. जीवनात अनेक संकटे आली, परंतु सतत संघर्ष करण्याची तयारी आणि कठोर परिश्रम यांच्या बळावर त्यांनी जागतिक पातळीवर आपल्या कार्याचा ठसा उमटवला.

एरव्ही आपल्या उद्योगधंद्याची किंवा कंपनीची जाहिरात करण्यासाठी त्या त्या मालकांना एखाद्या प्रसिद्ध चित्रपट कलाकाराची किंवा एखाद्या ख्यातनाम व्यक्तीची ब्रँड अम्बेसडर म्हणून आवश्यकता भासते ,पण आपल्या कंपनीचे आपणच ब्रँड अम्बेसडर बनून आपल्या सडपातळ पण भारदस्त अशा बहारदार व्यक्तिमत्त्वाची दर्शकांच्या मनावर भुरळ पाडणारे हे कलाकार उद्योगपती कदाचित पहिलेच असतील..! आज जगभरातील शंभराहून अधिक देशांत त्यांचे मसाले विकले जातात. म्हणूनच त्यांची 'मसाला किंग' म्हणून सर्वत्र ओळख आहे. त्यांच्या संघर्षमय प्रवासाविषयी कदाचित वाचकांना कल्पना नसावी .अतिशय प्रतिकूल परिस्थितीवर मात करीत मआकांक्षापुढती गगन ठेंगणे....!' या उक्तीप्रमाणे प्रखर आत्मविश्वासाच्या बळावर त्यांनी मसाला उद्योग क्षेत्रात किर्तीमान स्थापित केला.

स्वातंत्र्यापूर्वी अखंड भारताच्या सियालकोट (सध्या पाकिस्तानात)येथे दि.२३ मार्च १९२३ रोजी एका मध्यमवर्गीय गुलाटी परिवारात जन्मलेले धर्मपाल लहानपणापासूनच प्रामाणिक, कष्टाळू व प्रयत्नवादी होते . वडील महाशय चुन्नीलाल व माता चन्ननदेवी यांनी त्यांच्यावर धार्मिक व मानवतेचे संस्कार टाकले. घरचा पारंपारिक हळद पावडर व मसाल्याचा व्यापार होता. त्या भागात आर्य समाजाचा सर्वाधिक प्रचार व प्रसार असल्याकारणामुळे गुलाटी कुटूंबावर देखील आर्य समाजी विचारांची छाप होती. परिवारातील सर्व धार्मिक विधी व संस्कार हे आर्य समाजानुसारच होत. धर्मपाल हे देखील या विचारांचे जीवनभर पाईक बनले.घरी सर्व कांही यथावत असले तरी धर्मपाल यांचे शिक्षणात लक्ष लागले नाही. त्यांना सुरुवातीपासूनच अभ्यासात विशेष रस नव्हता. म्हणून फक्त पाचवीपर्यंतचे शिक्षण झाल्यानंतर त्यांनी शाळा सोडून दिली आणि आपल्या वडिलांसोबत मसाल्यांच्या व्यापारात उतरले. लहानपणापासूनच व्यापाराबद्दल नवनवीन गोष्टी ते शिकत होते . अशातच साली भारत - पाकिस्तानची फाळणी झाली . त्यावेळी गुलाटी कुटुंबीय निर्वासित म्हणून दिल्ली शहरात आले. राजधानीत आल्यानंतर कुटुंबाचे भरण पोषण करण्यासाठी त्यांच्याकडे कांहीच नव्हते. सियालकोट मधील त्यांचा परंपरागत मसाले निर्मितीचा व्यापार बंद पडल्यामुळे गुलाटी कुटुंब आर्थिक दृष्ट्या कमकुवत बनले. कुटुंबाची सारी भिस्त तरुण वयातील धर्मपालांवर घेऊन ठेपली. कुटुंबाचे भरण पोषण कसे करावे? याची चिंता त्यांना सतावू लागली. वेळप्रसंगी कोणतेही कार्य करण्याची इच्छाशक्ती असल्या कारणाने त्यांनी एक टांगा चालविण्याचे ठरविले. घोडा व टांगा विकत घेऊन दिल्ली शहरातील कॅनॉट प्लेस ते करोलबाग पर्यंत त्यांनी प्रवाशांना येण्या - आणण्याचे कार्य केले. या धंद्यात त्यांना विशेष लाभ मिळत नव्हता. मसाले बनवण्याचे ज्ञान व कौशल्य हे पूर्वीपासूनचे असल्यामुळे १९५९ साली त्यांनी करोलबाग मध्येच एम. डी. एच. म्हणजेच महाशिया दी हट्टी या नावाने छोटा व्यवसाय सुरू केला. हळद, मिरची, धने, जिरे, मोहरी इत्यादींची पूड व मसाले बनवून त्यांची वितरण व्यवस्था अतिशय चोख व तत्पर केली. आपल्या मसाल्याची गुणवत्ता त्यांनी कधीही ढासळू दिली आहे.हळूहळू पुढे या व्यवसायाने मोठ्या उद्योग कंपनीचे रूप धारण केले. इवलेसे लावलेले रोपटे आज एका विशाल वृक्षात परिवर्तित झाले आहे. देश-

विदेशातील स्वयंपाकगृहांमध्ये एम.डी.एच. मसाल्यांचा सुगंध दरवळतो आहे. किचन किंग ,चना मसाला ,देगी मिरची, लाल तिखट,गरम मसाला, सांबर मसाला, राजमा मसाला, धने पावडर, जिरे व हळद पावडर, जलजीरा , चुंकी चाट यांसारखी उत्पादने आजही लोकप्रियता टिकवून आहेत.

दानशूरता ही महाशय धर्मपालजींची वेगळी ओळख ! केवळ उद्योग आणि व्यवसायात संलग्न होऊन अर्थार्जनापर्यंतच सीमित न राहता आपल्या कंपनीला मिळालेल्या आर्थिक नफ्यातून त्यांनी सामाजिक कार्याचा वसा घेतला. सामाजिक ,धार्मिक व सेवाभावी कार्यासाठी आजवर त्यांनी मोठ्या प्रमाणात निधी उपलब्ध करून दिला आहे. महर्षी दयानंद सरस्वतींनी वेदप्रचार व एकसंध मानव घडविण्याच्या उद्देशाने स्थापन केलेल्या 'आर्य समाज' या संस्थेला त्यांनी एक प्रकारे वाहून घेतले . मानवतेच्या संवर्धनासाठी देश-विदेशात चालविल्या जाणाऱ्या विविध संस्थांना श्री धर्मपालजींचे आर्थिक पाठबळ राहिले आहे. एम.डी.एच. या उद्योग समुहाने आजवर नि:शुल्क स्वरूपात देशात दहा रुग्णालये, पंधरा शैक्षणिक संस्था, वीसच्या वर संस्कृत - वेद पाठशाळा व गुरुकुले, सतरा वानप्रस्थाश्रम व आर्य समाज मंदिरासारखे प्रकल्प उभारले व त्यांना मदतीचा ओघ सुरूच ठेवला . महाराष्ट्रातील बीड जिल्ह्याच्या परळी वैजनाथ येथील श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रमातील वानप्रस्थ भवनासाठी त्यांनी सोळा लाख रुपयांचे अर्थसहाय्य देखील केले. तसेच सदोदित त्यांनी गोरगरीब विद्यार्थ्यांना, गरजवंत नागरिकांना, अपंग व दीन दुःखी पीडितांना उदार अंत:करणाने मोठ्या प्रमाणावर आर्थिक मदत केली आहे. त्यांचे उद्योग क्षेत्रातील अपूर्व योगदान व सामाजिक कार्यातील सहभागितेबद्दल भारत सरकारने त्यांना गतवर्षी '**पद्मभूषण**' हा किताब बहाल करून त्यांच्या प्रेरणादायी कार्याचा यथोचित असा गौरव केला आहे. असे हे मनस्वी उदार, पुरुषार्थी व दानशूर व्यक्तिमत्त्व युगानुयुगे नव्या पिढीला प्रेरणा देत राहील. महाशय धर्मपालजी यांचा '**टांगेवाला ते पद्मभूषण उद्योगपती**' पर्यंतचा जीवनप्रवास दीपस्तंभाप्रमाणे नवतरुणांना नूतन दिशा देणाराआहे.अशा या समाजसेवी कर्मयोग्यास भावपूर्ण श्रद्धांजली व विनम्र अभिवादन...!

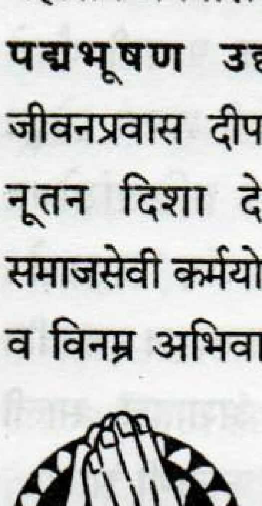

'श्रुतिगंध',
ब-१३, विद्यानगर,
परळी-वै. जि.बीड
(मो.९८२३३४६७६२)

महाशयजींना 'दै.लोकसत्ता'ची श्रद्धांजली

प्रसिद्ध उद्योगपती व समाजसेवी व्यक्तिमत्त्व पद्मभूषण महाशय धर्मपालजी गुलाटी यांच्या निधनानंतर विविध वृत्तपत्रांतून त्यांच्या प्रेरक जीवन व कार्यावर प्रकाश टाकत बातमी/लेख प्रसिद्ध झाले. महाराष्ट्रातील दैनिक लोकसत्ता या आघाडीच्या वृत्तपत्राने दि.०५.१२.२०२० रोजी संपादकीय पृष्ठावरील आपल्या 'व्यक्तिवेध' या सदरातून त्यांच्या अलौकिक जीवन प्रवासावर प्रकाश टाकला आहे. वाचकांसाठी आम्ही तो जशास तसा प्रकाशित करीत आहोत. – संपादक

जाहिरात ही एक कला आहे. तिच्या माध्यमातून निर्मात्यांना आपली उत्पादने ग्राहकापर्यंत पोहोचविता येतात. मात्र एखादा सिनेमा हिट होईल अथवा डब्यात जाईल, याप्रमाणे तिच्या सादरीकरणावरही उत्पादनाचे, त्या कंपनीचे यशापयश अवलंबून असते. '**महाशयां**'नी मात्र या चौसष्टांपैकी एक कलेचा चांगला उपयोग करून घेतला. मग तो टांगाचालक म्हणून '**करोल बाग, दो आना**' असे दिल्ली रेल्वे स्टेशनवर हाळी देण्याचा कृष्णधवल कालावधी असो की '**दादाजी**' नात्याने नवपरिणीत युवा दाम्पत्याला दूरदृश्यसंवादाद्वारे आशीर्वाद देणारा 'ईस्टमनकलर' चा सद्य कालावधी असो. यशाची ही मेख धर्मपाल गुलाटी यानी नेमकी ओळखली होती.

कार्टूनिस्ट प्राणच्या 'चाचा चौधरी' सारखा फेटा आणि मिशी, चेहऱ्यावर नियमित हास्य, नजरेत करडा आत्मविश्वास, '**साठ साल के जवान**' ला (झंडू केसरी जीवनची जाहिरात आठवते का?) लाजविणारे, व्यक्तिमत्त्व गुरुवारी काळाच्या पडद्याआड गेले. वयाने शतकाच्या उंबरठ्यावरील महाशय, दादाजी अर्थात 'मसाला किंग' म्हणजेच धर्मपाल गुलाटी यांचे करोनाची बाधा झाल्यानंतर आलेल्या हृदयविकाराच्या झटक्याने दिल्ली रुग्णालयात निधन झाले.

टाळेबंदीत प्रत्येक जण

निराशावस्थेत असतांना समाजमाध्यमांवर फिरणाऱ्या 'टांगा ते रोल्स रॉईस' अशी अनुक्रमे कृष्णधवल व रंगीत छायाचित्रातील (केशारोपण जाहिरातीतील बिफोर-आफ्टरप्रमाणे) व्यक्ती मात्र उभारी द्यायची. धर्मपाल यांचा प्रवासच तसा होता म्हणा.

वडिल चुन्नीलाल गुलाटी यांनी तेव्हाच्या अखंड पंजाबातील सिआलकोट शहरात (आता पाकिस्तानात) सुरु केलेल्या किराणा दुकानात मन रमले नाही, म्हणून सुतारकाम, प्रसंगी साबणाच्या कारखान्यात कामगार म्हणून भूमिका वठविली. दिल्लीत आल्यानंतर धर्मपाल यांनी जवळ असलेल्या १,५०० रूपयांपैकी ६५० रूपयांमध्ये टांगा खरेदी करून तो 'करोल बाग, दो आना' असा प्रचार करत उदरनिर्वाह केला. स्वत:बरोबर मोठ्या कुटुंबाचा भार असा काही आण्यांमध्ये पेलणारा नाही, हे ओळखून त्यांनी पूर्वाश्रमीचा व्यवसाय अंगिकारला. यात यश असल्याचे हेरून त्यांनी त्याला नेटके रूप दिले. आकर्षक वेष्टनासह, यंत्राच्या साह्याने उत्पादनांची निर्मिती सुरु केली. वडिलांनी ठेवलेल्या 'एमडीएच' नावाला कंपनीचा आकार दिला. **'महाशिआन दी हट्टी, सिआलकोट देग्गी मिर्चवाले'** अशी जाहिरात वर्तमानत्रातून दिली. आणि त्याच जोरावर चार दशकात खिशातील '१,५०० रूपये ते १,५०० कोटी रूपयांचा व्यवसाय' असा प्रवास नोंदवला.

पाचवी चे शिक्षण अर्धवट सोडून शाळेला रामराम करणारे धर्मपाल 'एमडीएच' च्या जोरावर २० हून अधिक शैक्षणिक, आरोग्य संस्थांचे संस्थापक बनले. वर्षाला २१ कोटी वेतन घेणारे सर्वोच्च 'सीईओ' अर्थात मुख्याधिकारी म्हूणन त्यांच्या नावाची नोंदही झळकली. देशाचा तिसरा अव्वल नागरी पुरस्कार - **'पद्मभूषण'** ने ते सन्मानित होते. 'रूपा पब्लिकेशन्स' च्या मल्लिका अहलुवालिया यांच्या 'डिव्हायडेड बाय पार्टिशन, युनायटेड बाय रेझीलियन्स' या त्यांच्यावरील पुस्तकाच्या मथळ्याप्रमाणेच आज 'एमडीएच' उद्योग समूह टाटा, बिर्ला, अंबानी, अदानीच्या भाऊगर्दीत भक्कम उभा आहे. त्याचा पाया अर्थातच दादाजी 'महाशय' यांनी घालून दिलेला आहे.

(साभार-दै.लोकसत्ता दि.०५.१२.२०२०)

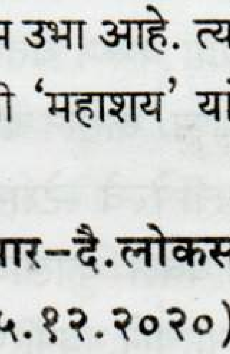

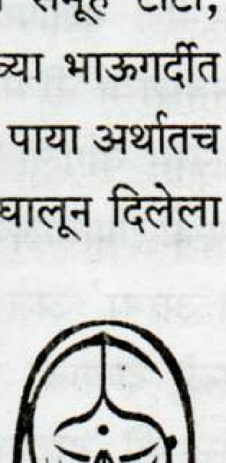

महर्षि दयानंदांचे सामाजिक विचार

– इंजि.सिद्धार्थ माणिकराव देशमुख

महर्षि दयानंदांचा जन्म इ.स.१८२४ सालामध्ये झाला. त्यांचे संपूर्ण नाव मूलशंकर करसनजी तिवारी होय. त्यांचे कुटुंब शैव ब्राह्मण शिवोपासक असल्यामुळे त्यांना पूर्ण धार्मिक परंपरांचे काटेकोरपणे पालन करावे लागले. पुढे बुद्धी व तर्काच्या आधारावर त्यांनी अनेक प्रकारे आपल्या जीवनामध्ये आवश्यक बदल घडवून आणला. एकोणिसाव्या शतकामध्ये जग आधुनिकतेच्या दिशेने मार्गक्रमण करत असतांनाही भारतीय समाजव्यवस्थेमध्ये मात्र अनेकानेक तऱ्हेच्या विषमतावादी समस्यांना भारतदेश सामोरे जातांना पाहून स्वामी दयानंद सरस्वतींनी आयुष्यभर विविध क्षेत्रांमध्ये आमूलाग्र बदलाच्या दिशेने आपले संपूर्ण जीवन व्यतीत केल्याचे आपणास दिसून येते. भारतीय समाजाची त्यांनी केलेल्या कृतिशील वैचारिक सेवेचा इतिहास फार मोठा आहे.

आर्य समाजाची स्थापना –

भारतीय समाजात खूप मोठ्या अंधश्रद्धा, वाईट चालीरीती, अनिष्ट रुढी-परंपरांचा सुळसुळाट झालेला होता. या विचित्र परिस्थितीमध्ये हजारो वर्षांची वैभवशाली परंपरा असलेला 'वैदिक धर्म' खऱ्या अर्थाने बुडतो की काय? अशी परिस्थिती निर्माण झालेली होती. उच्च-नीच, श्रेष्ठ-कनिष्ठ अशा निरर्थक भेदभावांनी समाजामध्ये उग्र रूप धारण केलेले होते. हिंदू धर्मातील शूद्र वर्णाची परिस्थिती तर अतिशय हलाखीची झालेली होती. या विचित्र परिस्थितीचा फायदा परकीय ब्रिटीश लोक घेत होते. त्यावेळी स्वामीजींनी भारतीय समाजव्यवस्थेला खडसावून सांगितले, 'सर्व माणसे एकाच ईश्वराची संतान आहेत. इथे कुणीही कुणापेक्षा कमी प्रतिष्ठेचा नाही. सर्व सर्वांसाठी एक समान आहेत.' या सर्व प्रतिकूल परिस्थितीवर यशस्वीपणे मात करण्यासाठी स्वामीजींनी एप्रिल १८७५ रोजी मुंबई येथे आर्य समाजाची स्थापना केली.

स्त्री व दलितांना मानाचे स्थान –

भारतीय स्त्रियांना समाजात तुच्छतेची वागणूक दिली जात होती. तिला शिक्षणापासून वंचित ठेवले गेले. तेंव्हा स्वामीजींनी 'यज्ञ नार्यस्तु पूज्यन्ते...!' या मनुस्मृतीच्या वचनाचा पुरावा देऊन तसेच वेद व इतर वैदिक साहित्यांचा आधार देत स्त्रियांना सन्मानाचे स्थान दिले. त्याचबरोबर दलित बांधवांना देखील फारच हीन दर्जाची वागणूक

ब्राह्मण वर्गाकडून दिली जात होती. शिक्षण व सामाजिक व्यवहारापासून ते दूर होते. अशावेळी स्वामीजींनी दलित बांधवांनाही आपलेसे केले. भारतीय समाजाचा ते देखील एक महत्त्वपूर्ण घटक आहेत असे त्यांनी वेदशास्त्राच्या माध्यमाने ठासून सांगितले. अशा प्रकारे स्त्री व दलितांना समान लेखून समर्थ भारताच्या भूमीवर मोठे समतावादी आंदोलन उभे केले. शिक्षणामुळे माणसाच्या जीवनामध्ये क्रांतिकारी बदल होतो. खरे शिक्षण प्राप्त केल्याने मग स्त्री आणि पुरुष असा भेद शिल्लक राहत नाही. ज्याप्रमाणे पुरुष सर्व क्षेत्रे पादाक्रांत करू शकतो, त्याचप्रमाणे शिक्षणविषयक हक्क तेवढ्याच प्रमाणात स्त्रीला सुद्धा आहेत. महर्षींनी अशा प्रकारे स्त्री-पुरुषांना बरोबरीचा दर्जा प्राप्त करून दिला.

सामाजिक सुधारणा -

एकोणिसाव्या शतकामध्ये भारतात खूप मोठ्या प्रमाणात बालविवाहाची कुप्रथा प्रसिद्धीस पावलेली दिसून येते. मूल गर्भावस्थेत असतानाच त्याचा विवाह निश्चित केल्या जात असे. त्याचे अनिष्ट परिणाम भारतीय समाजाला अनुभवावे लागत असत. या प्रथेविरुद्ध स्वामीजींनी एल्गार पुकारला बालविवाह प्रथा बंद झाली. स्वामीजींनी विधवांच्या विवाहास सुद्धा प्रतिष्ठा मिळवून दिली. अशा अनाथ महिलांना जीवनाच खूप मोठा आधार प्राप्त झाला. स्वामीजींचे हे ऐतिहासिक कार्य भारत कधीही विसरू शकणार नाही.

श्रमाला प्रतिष्ठा प्राप्त करून दिली -

भारतीय समाजामध्ये जो जितके हलके काम करतो, तो तितका या व्यवस्थेतील हलक्या प्रतिचा माणूस, अशी येथील मान्यता होती. स्वामीजींनी ठणकाऊन सांगितले, कोणतेही काम हे शेवटी काम असते. ते कधीही अपवित्र असूच शकत नाही. जीवन जगत असतांना प्रत्येक कार्याला तितकेच महत्त्व आहे. कोणतेही काम दुसऱ्या एखाद्या कामापेक्षा कमी प्रतीचे असणे हे व्यावहारिक नाही. तेंव्हा स्वामीजींनी खऱ्या अर्थाने श्रमाला प्रतिष्ठा प्राप्त करून देण्याचे ऐतिहासिक कार्य केले. स्वामीजींचा सत्यधर्म सांगतो की, 'तू आपल्या श्रमातून मिळवलेल्या अन्नाचा योग्य उपभोग घे आणि तसेच स्वत:च्या पोटासाठी दुसऱ्याची रोटी हिसकावून घेण्याचा तूला काहीही अधिकार नाही.'

धर्माला तत्त्वज्ञानाचे अधिष्ठाण -

स्वामी दयानंदांचा त्रैतवाद, कार्यकारणभाव या पद्धतीने संपूर्ण जगाची निर्मिती झाली आहे, अशी दयानंदांची धारणा होती. मन, आत्मा, पूनर्जन्म, ईश्वर

या सर्व बाबींकडे दयानंद अत्यंत विधायक दृष्टीने पाहात होते. स्वामीजींच्या चिंतनातून समाजाला एक नवी दृष्टी प्राप्त झाली.

शिक्षणामुळे सर्वांगीण विकास –

अनेकविध अंगांनी स्वामीजींनी भारतीय समाजाला शिक्षणाचे खरे महत्त्व पटवून दिलेले दिसून येते. स्वामीजी एके ठिकाणी म्हणतात, 'ज्ञान ही एक अशी शक्ती आहे, की ज्ञानाशिवाय मनुष्य पशू होय.' स्वामीजींच्या मते शिक्षण हे मनुष्याच्या सर्वांगिण उन्नतीने खरे साधन होय. खऱ्या शिक्षणामुळे मनुष्याची शारीरिक, आर्थिक, आत्मिक आणि मानसिकदृष्ट्या सर्वांगीण प्रगती होते. स्वामीजींनी याकरिता शिक्षण अनिवार्य आणि मोफत मिळावे, म्हणून अनेक ठिकाणी अनाथालय व आश्रम शाळा काढल्या. वेदकालीन शिक्षणाची प्राप्ती व्हावी, या उद्देशाने स्वामीजींनी गुरुंच्या घरी राहून गुरुंचे काम सेवाभावे करून शिक्षणाची प्राप्ती करता यावी, यासाठी गुरुकुलपद्धती अंमलात आणली.

सुयोग्य पद्धतीने शुद्धीकरण–

महर्षी दयानंदांच्या काळामध्ये या देशात जातिव्यवस्थेचे स्तोम मोठ्या प्रमाणात फोफावलेले दिसून येते. ख्रिश्चन, इस्लाम इत्यादी धर्मांमध्ये प्रवेश केलेल्या पूर्वाश्रमीच्या हिंदू धर्मियांना परत स्वगृही येण्यामध्ये अनेक प्रकारचे अडथळे असायचे. या जाचक धार्मिक बंधनाच्या बाबतीत स्वामीजींनी खूप मोठा संघर्ष केलेला दिसून येतो. स्वामीजींनी अशा पूर्वाश्रमीच्या हिंदूधर्मीय लोकांना पुन्हा स्वगृही परतण्यासाठी सहज आणि सुलभ अशा प्रकारची धार्मिक शुद्धीकरणाची पर्यायी व्यवस्था निर्माण केली. अशा प्रकारे हिंदू धर्माचे महाद्वार सामान्य माणसासाठी स्वामीजींनी खुले केले. यानंतर मूळ वेदांचे विशुद्ध स्वरूप सामान्य लोकांच्या समोर आल्याने स्वामीजींनी भारतीय समाजव्यवस्थेच्या जनामनात कायमचे स्थान निर्माण केले, यात कुठलाही संदेह नाही.

साधारणपणे वयाची एकोणसाठ–साठ वर्षे स्वामीजींनीअखंड भारतवर्षाची अविरतपणे सेवा केली. शेवटी ३० ऑक्टोबर १८८३ रोजी स्वामीजींनी आपल्या सर्वांचा अखेरचा निरोप घेतला. महर्षि दयानंदांच्या विचार आणि कार्यास कोटी–कोटी प्रणाम!

***

(लेखक बेंगलोर येथील 'इम्पॅक्ट ॲनालिपिक्स'या प्रसिद्ध अमेरिकन कंपनीत डेटा सायंटिस्ट या पदावर कार्यरत आहेत.)

– 'बळीवंश', शंकर–पार्वतीनगर, परळी–वै. जि.बीड (मो.९४२०६३८०८३)

अजनीच्या आर्य समाजाचे भूमिपूजन संपन्न

अजनी येथे बांधण्यात येणारे आर्य समाजाचे भवन वैदिक धर्म प्रचाराचे केंद्र बनावे, अशी अपेक्षा आर्य प्र. सभेचे मंत्री श्री राजेंद्र दिवे यांनी व्यक्त केली. अजनी गावात नुकतेच आर्य समाज भवनाचे भूमिपूजन श्री दिवे यांच्या हस्ते करण्यात आले. यावेळी प्रमुख पाहुणे म्हणून सभेचे पुस्तकाध्यक्ष श्री ज्ञानकुमारजी आर्य ,श्री अशोकजी कातपुरे (सुगाव), श्री हनुमंतराव पाटील (बाकली) , पं. प्रतापसिंह चौहान, रामेश्वर राऊत हे उपस्थित होते. श्री ज्ञानकुमारजी आर्य व पं.दिनेश शास्त्री यांच्या पौरोहित्याखाली पार पडलेल्या भूमियज्ञात सौ.व श्री महादेव शिंदे आणि सौ.व श्री केशव शिंदे हे यजमान म्हणून उपस्थित होते. भूमिपूजनानंतर सभामंत्री श्री दिवे, श्री कातपुरे व इतरांनी मार्गदर्शन केले. या कार्यक्रमास गावातील प्रतिष्ठित नागरिक सर्वश्री दिलीप पाटील ,शिवराज सातरे ,शिवराज कुंभार, बालाजी शिंदे, देविदासराव कन्हेरे ,रावसाहेब शिंदे, विठ्ठलराव शिंदे , दिनेश शास्त्री यांच्यासह असंख्य मान्यवर उपस्थित होते.

यावेळी सर्वश्री नेताजी रेड्डी, धनाजी रेड्डी, बाळासाहेब रेड्डी यांनी एक खोली तर सर्वश्री बाबुराव कांबळे व तातेराव कांबळे यांनी एक खोली बांधून देण्याचे आश्वासन दिले. हा कार्यक्रम घडवून आणण्यास आर्य समाजाचे प्रधान श्री रमेश रेड्डी, मंत्री शहाजीराव कान्हेरे यांच्यासह इतर पदाधिकाऱ्यांनी मोलाचे प्रयत्न केले. कार्यक्रमाचे सूत्रसंचालन श्री प्रणव मादलापुरे यांनी केले ,तर आभार नुकतेच दूरसंचार विभागातून निवृत्त झालेले आर्य कार्यकर्ते श्री प्रदीप मादलापुरे यांनी केले.

आर्य समाज संभाजीनगर तर्फे जरोडा गुरुकुलास कार भेट

आर्यसमाज, संभाजी नगरच्या वतीने जरोडा (जि.हिंगोली) येथील आर्ष गुरुकुलास नुकतेच मारुती (कार)वाहन भेट करण्यात आले. एक वर्षापुर्वी श्री स्वामी गोविंद्देवजी यांनी प्रधानाचार्य म्हणून या गुरुकुलाचा कारभार हाती घेतला व हे गुरुकुल पुन्हा कार्यान्वित झाले आहे. येथे काही विद्यार्थी वेद ,व्याकरण, संस्कृत, दर्शन हे विषय आचार्यजींच्या मार्गदर्शनाखाली शिकत आहेत. या गुरुकुलास अनेक दानशूर मंडळी व आर्य कार्यकर्ते सहयोग करीत आहेत.

याच श्रृंखलेत संभाजीनगर (औरंगाबाद) येथील सरस्वती कॉलनी आर्य समाजातर्फे महर्षी स्वामी दयानंद त्यांच्या व्या महानिर्वाण दिनानिमित्त ही मारुती कार भेट देण्यात आली. त्यावेळी प्रमुख पाहुण्या महानुभाव पंथाच्या महंत सुभद्रा आत्या यांच्या शुभहस्ते सदरील कार आचार्य स्वामी गोविंद्देवजी त्यांना प्रदान करण्यात आली. यावेळी आर्य समाज संभाजीनगर चे प्रधान श्री जुगलकिशोरजी दायमा , मंत्री श्री दयारामजी बसैये बंधू , कोषाध्यक्ष ॅड .जोगेंद्रसिंह चौहान यांच्यासह श्रीहरी कुलकर्णी, श्री संजय केनेकर, मनोज पाडळकर, ओमप्रकाश बसैये, जगन्नाथ बसैये आदी मान्यवर उपस्थित होते.

-* शोकवार्ता *-

श्री गणपतरावजी निरमनाळे गुरुजी यांचे निधन

एक व्रतस्थ शिक्षक व आर्यसमाजाच्या प्रचार कार्यात मोलाची भूमिका बजावणारे तगरखेडा, औराद (श.)चे भूमीपुत्र श्री निरमनाळे गुरुजी(वय ९१) यांचे दि.२७ नोव्हेंबरला वृद्धापकाळाने दुःखद निधन झाले. त्यांच्यामागे पत्नी सीताबाई, श्री जयंत व श्री ओमप्रकाशजी हे दोन सुपुत्र आणि दोन कन्या तसेच सुना,जावई, नातवंडे असा विशाल परिवार आहे.

ते शांत, सौम्य व सात्विक स्वभावाचे कर्मनिष्ठ व्यक्तिमत्व म्हणून ओळखले जात. या आर्य समाजाचा विस्तार करण्यात व प्रचार-प्रसाराचे कार्य वृद्धिंगत करण्यात त्यांनी यशस्वीपणे प्रयत्न केले. महाराष्ट्र सभेतर्फे आयोजित विविध ठिकाणच्या आर्य कन्या संस्कार शिबिरांमध्ये या आर्य शिक्षक दाम्पत्याने आपल्या शाळेतील व परिसरातील मुलींना मोठ्या संख्येने पाठविले. मुलींच्या संरक्षणार्थ श्री गुरुजींनी आपल्या धर्मपत्नी सौ .सीताताईंना शिबिरस्थळी आठवडाभर थांबून संस्कार प्रशिक्षण कार्यात पूर्ण सहयोग देण्याकरिता प्रेरणा दिली.

दिवंगत श्री गुरुजींच्या पार्थिवावर सायंकाळी तगरखेड येथे वैदिक पद्धतीने अंतिम संस्कार करण्यात आले. सर्वश्री प्राचार्य शिवाजीराव जाधव, डॉ. प्रकाश कच्छवा , व पं.सुभाष गायकवाड यांनी हा अंत्यविधी पार पाडला. यावेळी पंचक्रोशीतील आर्य कार्यकर्ते व प्रतिष्ठित नागरिक मोठ्या संख्येने उपस्थित होते.

वेदप्रचारक, पुरोहित पं. सुधाकरजी शास्त्री यांचे निधन

प्रांतीय आर्य प्रतिनिधी सभेचे वेदप्रचार अधिष्ठाता व उपदेशक, वक्ते श्री पं. सुधाकरजी शास्त्री यांचे वयाच्या ६०व्या वर्षी दि.१८.११.२०२० रोजी पहाटे दुःखद निधन झाले. गेल्या कांही महिन्यांपासून ते किडनीच्या विकारामुळे आजारी होते. त्यांच्यामागे श्री सुरज व धीरज ही दोन मुले व कु. किरण ही कन्या आणि स्नुषा सौ.सुधीरा, बंधू नागोराव विभुते, बहीण श्रीमती विमला आदी परिवार आहे. शास्त्रीजींच्या अकाली निधनाने महाराष्ट्रातील आर्य समाजांवर शोककळा पसरली असून मृत्यूची वार्ता ऐकून सर्वांना धक्का बसला.

त्यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी पुण्यातील औंध विद्युत दाहिनीत वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. यावेळी सभा व गुरुकुल परळी तर्फे पू.विज्ञानमुनिजी व पुण्यातील आर्य कार्यकर्ते उपस्थित होते.

(विस्तृत वृत्तांत पुढील अंकात..)

पद्मभूषण महाशय धर्मपालजींना आर्य समाजाची श्रद्धांजली

दानशूर उद्योगपती व एम.डी.एच .मसाले कंपनीचे चेअरमन दिवंगत पद्मभूषण श्री महाशय धर्मपालजी यांना येथील आर्य समाजातर्फे व प्रांतीय आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे भावपूर्ण श्रद्धांजली अर्पण करण्यात आली.

श्री धर्मपालजी यांचे परळीच्या आर्यसमाजाच्या वतीने चालविण्यात येणाऱ्या विविध समाजसेवी उपक्रमांना फार मोठे सहकार्य होते. नंदागौळ मार्गावर संचालित श्रद्धानंद गुरुकुलात बांधण्यात आलेल्या वानप्रस्थ आश्रमाच्या उभारणीसाठी श्री धर्मपाल यांनी सोळा लाखांचा भरीव निधी उपलब्ध करून दिला होता. त्याबरोबरच महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या वैदिक साहित्य प्रकाशन कार्यास देखील जवळपास तीन लाखांचे योगदान दिले होते. श्री धर्मपालजींच्या दानशूरवृत्ती व सामाजिक भावनेचा आदर करीत परळीतील आर्य कार्यकर्त्यांनी वानप्रस्थ भवनाचे महाशय धर्मपाल आर्य वानप्रस्थाश्रम असे नामकरणही केले. आज हे आश्रम वानप्रस्थी मुनिजनांसाठी ध्यान, धारणा, चिंतन व योगसाधनेचे केंद्र बनले आहे. श्री धर्मपालजी यांच्या निधनाने धार्मिक वृत्ती व प्रखर देशाभिमान असलेला एक पुरुषार्थी कर्मयोगी काळाच्या पडद्याआड गेला आहे.

दिवंगत आत्म्यांना प्रांतीय सभा व सर्व आर्य समाजांतर्फे भावपूर्ण श्रद्धांजली!

महाशयजी से सम्बधित महाराष्ट्र की कुछ स्मृतियाँ...!

सम्भाजीनगर(औ.बाद) के आर्य महासम्मेलन में महाशयजी के साथ डॉ.ब्रह्ममुनिजी एवं अन्य।

महाशयजी के सहयोग से परली गुरुकुल में नवनिर्मित वानप्रस्थाश्रम भवन का उद्घाटन।

महाशय धर्मपालजी(एम.डी.एच.) वानप्रस्थाश्रम-नूतन भवन के सम्मुख आर्यजन।

REG.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/24/2018-2020

सेवा में,
श्री

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' के संपर्क कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)' इस स्थान से प्रकाशित किया ।